17/09/2012 Regional development एवं Planning (RDP)

Paper-I

<u>प्रदेश की संकल्पना :-</u>

प्रदेश का वर्गीकरण

वर्गीकरण की विधियाँ

प्रादेशिक संतुलन

<u>प्रदेश की संकल्पना :-</u> प्रदेश का अर्थ है वह क्षेत्रीय इकाई जहाँ समरूपता केन्द्र की ओर अधिक एवं विषमतायें परिधि क्षेत्र की ओर वृद्धि करती है।

प्रदेश एक मानसिक संकल्पना है जो भू दृश्य के विषमताओं एवं यादृच्छिकी में श्रेणीबद्धता एवं समरूपता का चयन करता है। प्रदेश की सीमायें मुख्यतः संक्रमण क्षेत्र होती हैं क्योंकि भौगोलिक परिघटनाओं के संक्रमित भाग व्याप्त होते है। यह सीमा रैखांकित रूप में भी प्राप्त हो सकती है।

Ex- सवाना एवं उष्ण मरुभूमि के मध्य Ecotone संक्रमण सीमा है की प्रशासनिक सीमा रेखीय हो सकती है।

प्रदेश की संकल्पना को 2 प्रकार से विश्लेषित किया जाता है।

① <u>Subjective (विषयपरक) :-</u> यदि प्रदेश एक मानसिक संकल्पना अथवा ~~विचारात्मक~~ भावात्मक विचार के रूप है तो इसकी सीमा का निर्धारण नहीं हो सकता अथवा सीमा संक्रमण क्षेत्र होती है इस अर्थ में प्रदेश विषयपरक होता है।

(2)

वस्तुपरक :- जो प्रदेश भावात्मक न होकर वास्तविक होते है एवं उनके निर्धारित प्रतिमानों का सांख्यिकीय विश्लेषण होता है तथा ये रेखांकित सीमाओं से युक्त होते है।

प्रदेश का निर्माण प्रादेशिक संश्लेषण एवं क्षेत्रीय विभेदन पर निर्भर करता है जिसका अर्थ है समरूपी तत्वों का सामान्यीकरण एवं एक भौगोलिक composite चित्र की उत्पत्ति जो अपने समीपवर्ती भूदृश्य से लक्षणों में पृथक होता है अर्थात प्रदेश लक्षण युक्त एवं स्वविशेषताओं से रचित होते है।

प्रदे

प्रदेश का वर्गीकरण :-

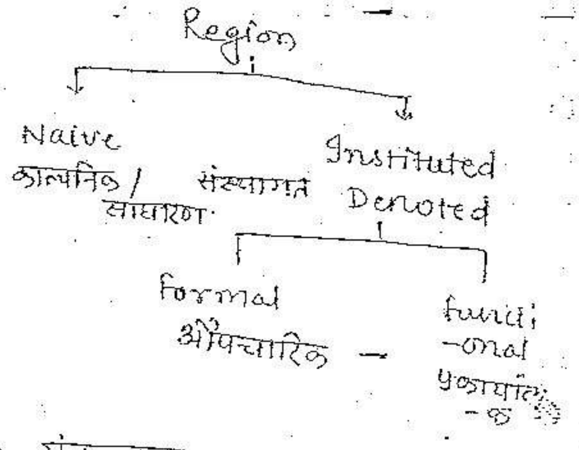

Naive :- (काल्पनिक) :- मानसिक संकल्पना पर आधारित प्रदेश जिनका अस्तित्व भावात्मक होता है तथा सीमा निर्धारित नही की जा सकती।

Ex. स्वर्ग, नर्क, पाताललोक

Instituted Denoted :- जिन प्रदेशों के भौतिक स्वरूप है, वास्तविक है, भूदृश्य में उपस्थित है।

औपचारिक :- औपचारिक प्रदेश का अर्थ है वे Region जिनके संगठक समेकित क्षेत्र का निर्माण करते हैं, जिनकी सीमा संक्रमित होती है, वास्तविक होते हैं परन्तु विषयपरक होते हैं, भावात्मक होते हैं भूगोलवेत्ताओं के मानसिक चित्र होते हैं परन्तु कल्पना नहीं।

Ex- प्राकृतिक प्रदेश, सवाना क्षेत्र,
सांस्कृतिक प्रदेश, भाषायी प्रदेश

Functional Region :- जहाँ वस्तुपरकता हो, रैखिक सीमांकन संभव है, भूदृश्य पर परिघटनाओं की उपस्थिति एवं प्रकार्यात्मकता अथवा प्रवाह से युक्त होता है।

Ex- औद्योगिक प्रदेश, महानगरीय प्रदेश

प्रदेश के सीमांकन की विधियाँ

औपचारिक प्रदेशों का सीमांकन :- चूँकि ये भावात्मक होते हैं एवं सीमायें संक्रमण क्षेत्र होती हैं अतः इनका निर्धारण एक जटिल समस्या है।

एकल चरीय विश्लेषण विधि :- इस विधि में किसी एक प्रतिमान को लिया जाता है तथा उसके विश्लेषण के आधार पर प्रदेश निर्माण करते हैं।

माना कि एक भूदृश्य जहाँ 2 इकाई क्षेत्र A एवं B हैं। यदि प्रादेशिक (आर्थिक) विषमता के आधार पर प्रदेश निर्माण करना है तब PCI by के द्वारा प्रदेश को संकल्पित किया जा सकता है।

यदि $a_y - b_y \geq K$ ...

यहाँ K = वह नियत मान है जो प्रदेशिक विषमता को दर्शाता है।

यदि $a_y - b_y = 0$

तब भूदृश्य एक समान है।

<u>बहु-चरीय विश्लेषण विधि :-</u>

$$a_i - b_i \geq k_j$$

i = बहु-चर

J = अलग अलग चरों का जो मान fix करेंगे.

<u>प्रकार्यात्मक प्रदेशों का सीमांकन :-</u>

A) <u>मात्रात्मक विधियाँ</u>

a) <u>Flow Analysis:-</u> Ex- औद्योगिक प्रदेश के लिए कच्चे माल, Labour, अंतिम उत्पाद्य, capital जैसे संघटक जिस दूरी से प्राप्त हो रहे हैं वह प्रदेश की सीमा बिन्दु मानी जायेगी।

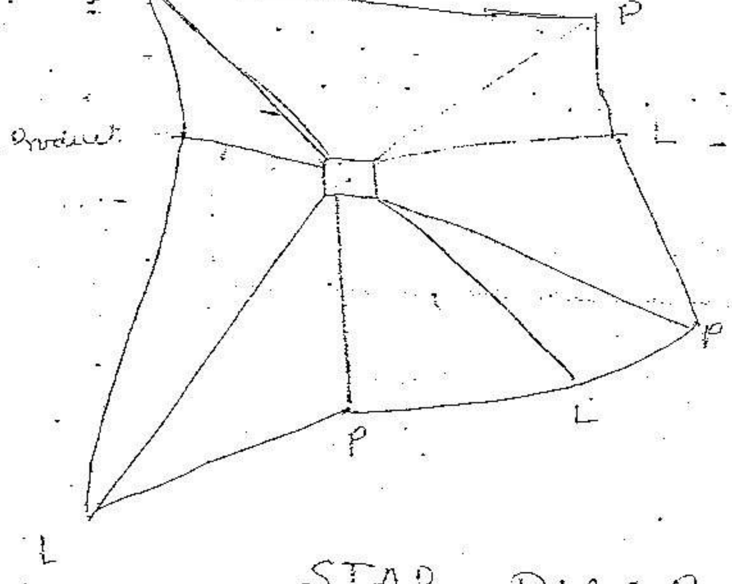

STAR DIAGRAM

b) Gravity Models के द्वारा

i) Stouffer
ii) Converse
iii) Reilly
} नगरीय प्रभाव क्षेत्र से इनका वर्णन करें।

c) Proximal - Thesian Polygon.

B) गुणात्मक विधियाँ :-

a) R.L. Singh

b) UN Criteria

प्रादेशिक संतुलन (Regional Imbalance, RI)

विश्व में प्रादेशिक असंतुलन

भारत —— " ——

प्रादेशिक असंतुलन को प्रभावित करने वाले कारक – समकालीन मुद्दे (Paper II)

प्रादेशिक संतुलन :- प्रादेशिक संतुलन का अर्थ है जहाँ आर्थिक एवं मानव विकास के सूचकों के भू-दृश्य पर एक समान फैले। प्रादेशिक असंतुलन इसका विपरीतार्थक है जो विकास की स्थानिक विश्लेषण में वैविध्य का सूचक है।

RI का अंतर्संबंध संतुलित विकास की संकल्पना पर आधारित है। Harrod equation के अनुसार यदि

$G_y = G_n = G_o$ हो तभी

संतुलित विकास माना जा सकता है और संतुलित विकास में ही प्रादेशिक संतुलन कायम होते हैं।

— G_y = PCI में वृद्धि

G_n = संसाधनों के विकास एवं संवृद्धि की दर को

G_o = प्रदेश के Output अथवा GDP के वृद्धि दर को दर्शाती है अर्थात जहाँ

न सिर्फ राष्ट्रीय आय बल्कि PCI एवं संसाधनों का विकास दर उच्च हो वहीं संतुलित विकास है।

यदि प्रदेश में आर्थिक विकास एवं मानव विकास की प्रक्रिया में संतुलन है तभी समेकित विकास माना जा सकता है।

किसी प्रदेश में संतुलित विकास तभी

. माना जा सकता है जब

a) आर्थिक एवं मानवीय विकास दोनों प्रक्रियायें तीव्र हो.
Ex- west asia में आर्थिक विकास तीव्र है परन्तु मानव विकास की प्रक्रिया निम्न है। अतः असंतुलित विकास है।

b) Capital growth एवं capital investment में संतुलन होना चाहिए।

c) संसाधनों के दोहन एवं पुनर्निर्माण में संतुलन अर्थात संपोषणीय विकास.

d) निर्यात एवं आयात के मध्य संतुलन संतुलित विकास को दर्शाती है।

e) प्रादेशिक विकास में विषमता न्यूनतम एवं आर्थिक क्रियाओं का प्रवाह एक समान हो।

f) कृषि एवं औद्योगिक विकास में संतुलन हो।

g) GDP में कृषि का भाग न्यूनतम, उद्योग एवं सेवा के अधिक भागीदारिता. संतुलित विकास की दशा को दर्शाते है।

h) प्रादेशिक विषमता अथवा असंतुलन मुख्य रूप से असंतुलित विकास की क्रियाओं से उत्पन्न होता है अर्थात यह प्रतिफल है जबकि इसके कारक उपरोक्त प्रक्रियाओं में निहित होते है

प्रादेशिक असंतुलन को प्रभावित करने वाले कारक :-

i) भौतिक कारक :- इसके अंतर्गत

a) जलवायु
b) मृदा
c) जल तंत्र
d) उच्चावच एवं ढाल
e) वनस्पति
f) प्राकृतिक संपदाओं का वितरण

THE BOOK SHOP
Shop No.- A-35/36, Bhandari House
Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-09
Phone : 011-27652485

ii) गैर भौतिक कारक :- ⓐ आर्थिक
ⓑ सामाजिक
ⓒ धार्मिक
ⓓ राजनैतिक
ⓔ नैतिक

iii) गतिकीय कारक

iv) प्रौद्योगिकी कारक

v) अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं का सहयोग

प्रादेशिक विषमता से संबंधित मॉडल।

a) Core - Periphery Model by Friedman :-

यह मॉडल इस संकल्पना पर आधारित है कि आर्थिक क्रियाओं का केन्द्र की ओर ध्रुवीकरण होता है जिससे परिधीय क्षेत्र विरल हो जाते हैं जिससे भूदृश्य पर आर्थिक वृद्धि की विषमतायें उत्पन्न होती हैं ~~चाहि~~ यह स्वाभाविक प्रक्रिया हैं अतः प्रादेशिक असंतुलन स्वतः स्वस्फूर्त प्रक्रिया है।

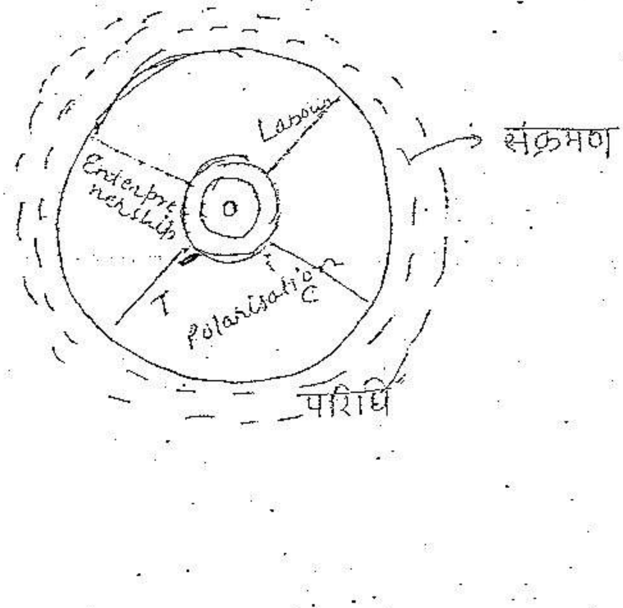

Cumulative causation Theory by Gunnar Myrdal
संचयी कारक

प्रसिद्ध अर्थशास्त्री Gunnar Myrdal ने प्रादेशिक असंतुलन को एक चरण बतलाया है अर्थात आर्थिक वृद्धि की दशाओं की अवस्था मात्र है। इसके पश्चात संपूर्ण भूदृश्य पूर्ण विकसित होकर विकास के साम्यावस्था में प्रवेश करता है। इन्होंने इसके 3 चरण बतलाये -

a) **First Phase :- Cumulative causation Phase :-** आर्थिक उत्पादन के सभी कारकों का संचयन होने की प्रक्रिया Ex- भूमि, श्रम, पूँजी, उद्यमशीलता का भूदृश्य के किसी आर्थिक केन्द्र पर संचयन होता है एवं जिससे आर्थिक विषमतायें, उत्पन्न होने लगती है।

b) **Backwash Effect :- (पश्चप्रवाह प्रभाव) :-** जब विकास केन्द्र में तीव्र आर्थिक क्रियायें होती है तब समीपवर्ती प्रदेश का आर्थिक मरुभूमिकरण हो जाता है। क्योंकि Brain drain, Economic drain होते है। यह क्षेत्रीय विषमता का चरम काल होता है।

c) **Spread out Effect :-** जब विकास केन्द्र पूर्ण विकसित होगा तब आर्थिक लाभ भूदृश्य पर चारों तरफ फैलते है एवं एक समान वृद्धि अथवा आर्थिक साम्यावस्था कायम हो जाती है तथा क्षेत्रीय विषमता दूर हो जाती है।

ii) **गैर भौतिक कारक** :- ⓐ आर्थिक
ⓑ सामाजिक
ⓒ धार्मिक
ⓓ राजनैतिक
ⓔ नैतिक

iii) गतिकीय कारक

iv) प्रौद्योगिकी कारक

v) अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं का सहयोग

प्रादेशिक विषमता से संबंधित मॉडल।

(a) **Core - Periphery Model by Friedman** :-

यह मॉडल इस संकल्पना पर आधारित है कि आर्थिक क्रियाओं का केन्द्र की ओर ध्रुवीकरण होता है जिससे परिधीय क्षेत्र विरल हो जाते हैं जिससे भूदृश्य पर आर्थिक वृद्धि की विषमतायें उत्पन्न होती हैं ~~चाहि~~ यह स्वाभाविक प्रक्रिया है अतः प्रादेशिक असंतुलन स्वतः स्व स्फूर्त प्रक्रिया है।

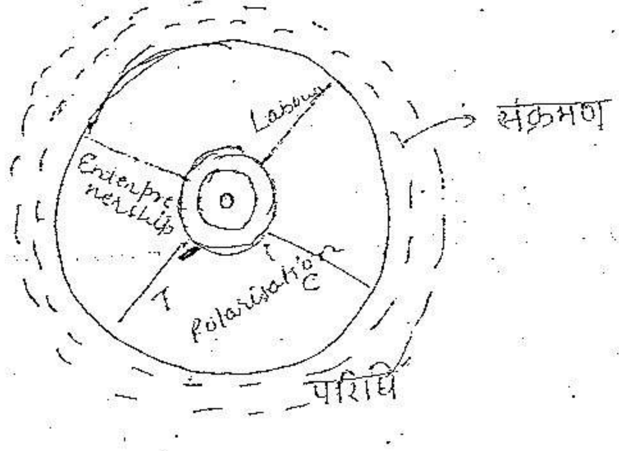

Cumulative causation Theory by Gunnar Myrdal
संचयी कारक

प्रसिद्ध अर्थशास्त्री Gunnar Myrdal ने प्रादेशिक असंतुलन को एक चरण बतलाया है अर्थात आर्थिक वृद्धि की दशाओं की अवस्था मात्र है। इसके पश्चात संपूर्ण भूदृश्य पूर्ण विकसित होकर विकास के साम्यावस्था मे प्रवेश करता है। इन्होंने इसके 3 चरण बतलाये -

a) **First Phase :- Cumulative causation Phase** :-

आर्थिक उत्पादन के सभी कारकों का संचयन होने की प्रक्रिया Ex- भूमि, श्रम, पूँजी, उद्यमशीलता का भूदृश्य के किसी आर्थिक केन्द्र पर संचयन होता है एवं जिनसे आर्थिक विषमतायें, उत्पन्न होने लगती है।

b) **Backwash Effect :- (पश्चप्रवाह प्रभाव)** :- जब विकास केन्द्र में तीव्र आर्थिक क्रियायें होती है तब समीपवर्ती प्रदेश का आर्थिक मरुभूमिकरण हो जाता है। क्योंकि Brain drain, Economic drain होते है। यह क्षेत्रीय विषमता का चरम काल होता है।

c) **Spread out Effect** :- जब विकास केन्द्र पूर्ण विकसित होगा तब आर्थिक लाभ भूदृश्य पर चारों तरफ फैलते है एवं एक समान वृद्धि अथवा आर्थिक साम्यावस्था कायम हो जाती है तथा क्षेत्रीय विषमता दूर हो जाती है।

Growth Pole एवं Growth Centre की अवधारणा

Perroux & Bondville } Model & Theory से

Growth Pole	Growth centre
(1) Perroux की संकल्पना है जो France में विकसित हुई।	(1) USA में विकसित हुई तथा Perroux से स्वतंत्र परिकल्पना है। जिसे समर्थक संकल्पना Boudville की प्राप्त होती है।
(2) Growth Pole राष्ट्रीय स्तर पर कार्य करता है।	(2) प्रादेशिक स्तर पर कार्य करता है।
(3) समूहन प्रभाव का द्योतक है जहां 3 अथवा अधिक भारी एवं रोजगार सृजक उद्योग तथा अन्य आर्थिक क्रियाओं का संकेन्द्रण होता है।	(3) ध्रुवीकरण एवं संचयी प्रभाव पर-आधारित है जहां उत्पादन के कारकों का केन्द्रीकरण होता है। एक अथवा 2 प्रणोदक उद्योग विकसित होते हैं।
(4) GP अतिउच्च केन्द्रीयता अथवा Centripetal force का परिणाम है।	(4) वृद्धि केन्द्र भूदृश्य पर कई निर्मित होते हैं। तथा प्रादेशिक इकाई के रुप में कार्य करते हैं।
(5) यह Economic space की संकल्पना पर कायम है।	(5) यह भौगोलिक space की संकल्पना पर आधारित
(6) Economic space का अर्थ है - a) An economic Plain जो किसी भूदृश्य पर लागू होती है। b) आर्थिक कारकों एवं शक्तियों का संकेन्द्रण Ex - पूँजी, श्रम	(6) भौगोलिक space वस्तुनिष्ठ संकल्पना है जो किसी भौगोलिक इकाई का संकेतक है। Ex - पूर्व अवस्थित महानगर अथवा औद्योगिक केन्द्र जहाँ आर्थिक क्रियायें पूर्व से ही संलग्न है।

उद्यमशीलता etc का आकर्षण केन्द्र

(c) An Aggregate अर्थात् विभिन्न आर्थिक, प्रौद्योगिक, सेवा एवं उद्योग क्षेत्रों के समूहन प्रभाव से उत्पन्न इकाई भाग।

Economic space एक मानसिक संकल्पना है। एक विवद परक विश्लेषण, वस्तु निष्टता का अभाव है। किसी भौगोलिक इकाई को इंगित नहीं करता बल्कि वह काल्पनिक अवस्थिति बिन्दु का संकेतक है। जहाँ अधिकतम लाभ प्राप्ति न्यूनतम लागत एवं न्यूनतम distance decay प्राप्त होता है जहां आर्थिक क्रियाओं की तीव्रता एवं समूहन प्रभाव संभव है।

इसका ex- Brazil में मेनास गेरास है। जहाँ लौह अयस्क उत्खनन एवं iron & steel पूर्व से अवस्थित है।

विकास केन्द्र भौगोलिक इकाइयों को माना गया है जबकि विकास ध्रुव संकल्पित भूदृश्य के आर्थिक प्रदेशों को जहाँ अधिकतम लाभ एवं समूहन प्रभाव उत्पन्न होने की संभावना है।

Noon
17/09/2012

Growth Pole एवं Growth centre का अभिमत क्रमशः France एवं USA में उत्पन्न हुए जिसका उद्देश्य त्वरित आर्थिक विकास एवं आर्थिक क्रियाओं के दर को तीव्र करना था। आर्थिक विकास से संबंधित 2 model हैं;

(1) Equilibrium growth Theory (साम्यावस्था वृद्धि सिद्धान्त)

इसमें यह माना गया है कि आर्थिक विकास संपूर्ण भूदृश्य पर एक साथ एक समान दर से होना चाहिए।

(2) Schumpter's Theory :- इसके अनुसार भूदृश्य पर एक समान विकास असंभव है एवं किसी वृद्धि केन्द्र पर आर्थिक शक्तियों के समूहन से तीव्र आर्थिक वृद्धि संभव होती है हालांकि यह प्रादेशिक विषमता को जन्म देती है परन्तु कालांतर में विकास केन्द्र से आर्थिक लाभ का विसरण होता है एवं संपूर्ण भू दृश्य पर विकास की प्रक्रियायें स्वचालित हो जाती हैं।

विकास ध्रुव की परिकल्पना Schumpter's theory से प्रभावित है।

विकास ध्रुव France में IInd WW के बाद 1950 के दशक में तीव्र आर्थिक वृद्धि के लिए परिकल्पित किया गया जिसके जनक F Perraux है। Baudville ने Perraux के Economic space शब्द को प्रतिस्थापित कर Geographical space एवं विकास केन्द्र की परिकल्पना की जो राष्ट्र स्तर पर क्रियाशील न होकर राज्य स्तर पर कार्य करता है।

विकास ध्रुव सिद्धान्त की मूलभूत अवधारणायें :-

① Concept of Economic space :- ES इनमें से 3 अथवा सभी 3 हैं :-

a) Economic plan - Ex- Barauni plant

b) Economic force :- जहाँ पूँजी, श्रम etc का केन्द्रीकरण है।

c) Inaggregate :- जहाँ खनिज संपदा, अवस्थिति, समूहन प्रभाव का कुल योग हो।

② Concept of dominent Industry :- प्रभावी उद्योग वह है जो आर्थिक क्रियाओं को तीव्र करे एवं अन्य उद्योगों को जन्म दे।

③ Concept of Propulsive Industry & firm :- प्रणोदक उद्योग का

④ अर्थ है जिस उद्योग में -

a) रोजगार सृजन की बड़ी संभावना हो

b) स्थानीय संसाधनों का सदुपयोग एवं विकास करे।

c) जिस उद्योग के Forward व Backward linkages अर्थात् अन्य पूरक सहयोगी उद्योगो के संजाल निर्माण की क्षमता हो।

d) प्रणोदक firm का अर्थ है वह फर्म जो पूँजी निवेश औद्योगिक वैविध्यीकरण, नये उद्योगों की स्थापना में संलग्न हो। Firm 2 प्रकार के होते है: (i) Firm internal to industries (ii) Firm external to ind.
firm < indus. firm > industry

Firm ↓ व्यक्तियों का समूह

④ Concept of Polarisation :- ध्रुवीकरण का अर्थ है उत्पादन के कारकों का सकेन्द्रीकरण

Land, Labour, capital, उद्यमशीलता का संकेन्द्रण

(5) समूहन प्रभाव :- इसका अर्थ है 3 अथवा अधिक प्रणोदक फर्म अथवा वृहद उद्योगो का सकेन्द्रित होना।

विकास ध्रुव के विकास की अवस्था :-

a) ध्रुवीकरण की अवस्था :- जब factor of production सरकारी नीतियो द्वारा अथवा अन्य उत्प्रेरकों से किसी एक केन्द्र की ओर प्रेरित होते है।

b) (समूहन) Agglomeration stage :- जब नये उद्योग, प्रणोदक फर्म एवं उद्योगो के अग्रगामी व पश्चगामी औद्योगिक संकुल विकसित होते है इस अवस्था मे विकास ध्रुव निर्मित हो जाता है तथा यह अपने समीपवर्ती क्षेत्रों में brain drain, Economic drain के कारण आर्थिक विपन्नता को जन्म देता है इससे प्रादेशिक विषमता उत्पन्न होती है। इसे Backwash effect भी कहा गया है।

c) (टपकन सिद्धान्त) Trickle down :- यह विकास ध्रुव की अंत्यावस्था है जिसमें आर्थिक लाभ प्रौद्योगिकी, पूँजी निवेश आर्थिक रूप से विपन्न प्रदेशों में फैल जाते हैं। तथा संपूर्ण भूदृश्य का विकास हो जाता है।

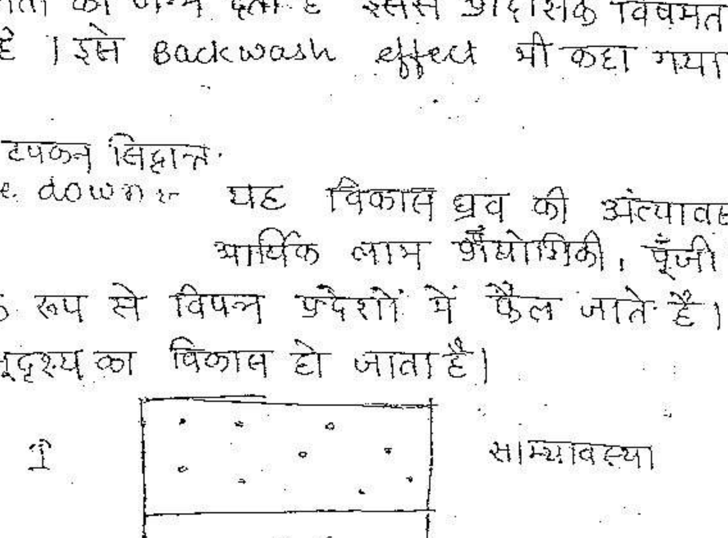

समालोचनात्मक विवरण :- Growth Pole जिस उद्देश्य से निर्मित हुआ था उसमें आंशिक सफलता प्राप्त हुई। विकास ध्रुव में तीव्र आर्थिक वृद्धि हुई परन्तु समीपवर्ती क्षेत्र गैर विकसित रहा। France में Paris का तीव्र आर्थिक वृद्धि परन्तु अन्य क्षेत्र आर्थिक रूप से पिछड़ गये जिसे Paris & the French desert की संज्ञा दी गई।

इस model में Trickle down stage प्राप्त नहीं होती। GP अनैच्छिक रूप से विकसित होता चला जाता है जबकि आर्थिक विपन्नता और बढ़ जाती है।

Growth centre, GP से अधिक विकासोत्प्रेरित है क्योंकि यह प्रादेशिक स्तर पर कार्य करता है।

आर्थिक अंतरिक्ष (ES) की परिकल्पना भावात्मक है, सुस्पष्ट नहीं। इस model में उद्योग, उत्पादन, द्वितीयक आर्थिक क्रियाओं पर अधिक बल है परन्तु सेवा क्षेत्र का विकास, संस्थागत विकास भी आर्थिक प्रगति के उत्प्रेरक होते हैं।

R.P. Mishra ने Growth Focii की परिकल्पना की है जिसमें Growth Focii को Growth level अथवा निम्न पदानुक्रम का सेवा केन्द्र बतलाया जहाँ बाजार शिक्षा, स्वास्थ्य, प्रौद्योगिकीय संस्था etc. का समूहन होता है। इन्होंने Alternative model प्रस्तुत किया।

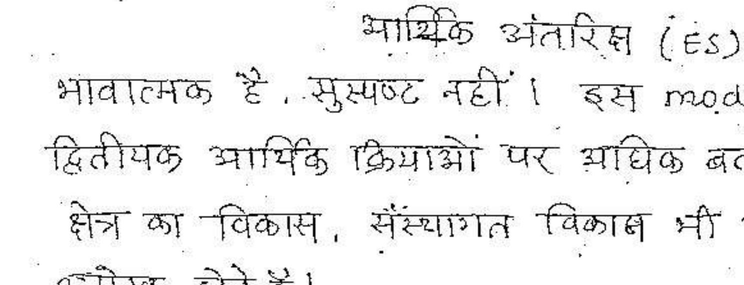

R.P. mishra ने Top to bottom के स्थान पर Bottom to top approach रखा है।

भारत में GC की स्थापना Backward area development prog. के तहत की गई।

Ex- Bokaro, Bhilai, Raurkela, Durgapur, HMT center etc. इसे भारत में आंशिक सफलता प्राप्त हुई। परंतु Trickle down सफल नहीं रहा।

केन्द्र स्थल सिद्धान्त से तुलना :-

CPT	GP
(1) ये समाजशास्त्रीय विश्लेषण पर आधारित है।	(1) ये अर्थशास्त्रीय विश्लेषण पर आधारित है।
(2) भूदृश्य की पूर्ण विकास की अवस्था में।	(2) भूदृश्य विकासशील अवस्था में है।
(3) Top to bottom Approach	(3) Bottom to top approach
(4) विकेन्द्रीकरण की धारायें	(4) केन्द्रीकरण / ध्रुवीकरण
(5) वस्तु एवं सेवा की आपूर्ति पर निर्भर	(5) वस्तु एवं सेवा के उत्पादन पर निर्भर
(6) ये मूल रूप से supply based model है।	(6) Demand based model
(7) तृतीयक आर्थिक क्रिया	(7) द्वितीयक आर्थिक क्रिया।
(8) विकसित देशों में व्यावहारिक जहां आर्थिक एवं प्रादेशिक विषमता कम है।	(8) विकासशील देश जहां आर्थिक एवं प्रादेशिक विषमता कम है। आर्थिक

Ecological Issues in Regional Planning :-

1972 में स्टॉकहोम सम्मेलन में पर्यावरणीय मुद्दे उभरकर सामने आये। Limits to growth के प्रकाशन से पर्याव-रणीय चिंतन की दिशा में उत्प्रेरणा मिली।

भारत में Tiwari comittee ने 1980में पर्यावरणीय मुद्दों पर रिपोर्ट प्रस्तुत की। जिसमें पर्यावरणीय मंत्रालय की स्थापना एवं योजना में पर्यावरण को एक चर के रूप में स्थापित किया गया।

Regional Planning का उद्देश्य विकास संबंधी प्रक्रियाओं को तीव्र करना है परन्तु विकास पर्यावरणीय संकट का पर्याय न बने इसके लिए Disaster mgmt, Enviornmental impact assessment जैसे नये उपागम स्थापित किये गये।

① Agricultural Dev. & Enviornmental issue :- Green revolution के सभी पर्यावरणीय मुद्दों का वर्णन।

② ग्रामीण विकास एवं पर्यावरणीय मुद्दे : ① ग्रामीण लघु कुटीर उद्योग

② गांव में मशीनीकरण
③ निकास प्रणाली से संबंधित
④ ग्रामीण चूल्हा
⑤ पेयजल से संबंधित

③ नगरीय विकास एवं पर्यावरणीय मुद्दे :- ① (जल, वायु, थल प्रदूषण)

② Slum से संबंधित।

(4) औद्योगीकरण एवं संबंधित मुद्दे :

(5) Hill Area dev. & Related issue

(6) Tribal area dev & Related issue :- Mining से संबंधित

Strategy of Planning (प्रादेशिक विकास कार्यनीतियाँ)

Planning :- प्रादेशिक विषमता, असंतुलित विकास, असमानता सामाजिक पिछड़ापन, नीति निर्माण के प्रमुख उत्प्रेरक होते हैं तथा योजना एवं नीतियों के द्वारा इनके निराकरण अथवा समाधान की प्रक्रियायें की जाती हैं क्योंकि स्वस्फूर्त सामाजिक आर्थिक प्रक्रियाओ से इनका समाधान संभव नही है तथा क्रांतिकारी परिवर्तनो के द्वारा इन सभी लक्ष्यों को त्वरित प्राप्त नही किया जा सकता ये दीर्घकालिक प्रक्रियायें हैं। योजना इन्ही प्रक्रियाओ को उत्प्रेरित करने वाला राज्य का एक साधन है।

योजना भविष्योन्मुखी विकास एवं वर्तमान के समस्याओं के निराकरण का उपागम होता है। इसमें समाजवादी दृष्टिकोण है तथा नीतियाँ मानव कल्याण की भावना से प्रेरित होती है।

योजना के 2 अंग है:

a) Policy

b) Strategy

कार्यनीति का अर्थ होता है नीतियों के आधार अथवा चिंतन एवं उनके क्रियान्वयन की प्रक्रियाओं के निर्देश। लक्ष्य प्राप्ति हेतु जिन आर्थिक अथवा सामाजिक नियमों के आधार पर नीतियाँ बनायी जाती है वह उसकी strategy है। नीतियों के बनने के पश्चात उनके क्रियान्वयन हेतु प्रायोजित उपागमों

को भी Strategy कहा जाता है।

Strategies of Planning :-

1. Resource inventerigation (संसाधन सूचीकरण) 1-2
2. समस्याओं का सूचीकरण
3. नीति निर्माण
4. Enviornment impact assessment
5. Social impact assessment / social cost analysis
6. Disaster mgmt.
7. Midterm appreasel (मध्यावधि समीक्षा)
8. Feed back / evaluation / Assessment etc
9. New policy making / Policy Alteration.

17/09/2012.
Evening

भारत में योजना की कार्यनीति एवं अनुभव (Paper II)

~~प्रथम पंचवर्षीय योजना~~ :- I

Phase I - Sectoral Planning :- इसका अर्थ है किसी एक आर्थिक क्षेत्र पर विशेष बल। प्रथम पंचवर्षीय ~~आदि~~ योजना की कार्ययोजना

output में वृद्धि करना तथा खाद्यान्न संकट से मुक्ति। यह Harrod - Damar Principle के आधार पर क्रियान्वयित किया गया था। इस नियम के अनुसार पूंजी बचत का अधिकतम भाग पुनर्पूंजी निवेश में लगाना जिससे उत्पादन में पुनः वृद्धि हो तथा अधिकतम पूंजी संचय तथा पुनर्निवेश करना इस प्रकार एक चक्र के रूप में कृषि उत्पादकता में वृद्धि एवं पूंजी संचय करना

प्रथम योजना में कृषि वृद्धि दर को 5%, बेहतर मानसून के कारण भारतीय कृषि का Performance अच्छा रहा।

ISI - Iron & steel ind.

II^nd Fyp :- ~~जिसमें~~ इसमें industrial dev. को विशिष्ट बल दिया गया जो Backward Area dev. Prog. से प्रेरित था। I.S.I को विकास केन्द्र माना गया तथा Trickle down approach अपनाया गया। 1956 के औद्योगिक नीति को भारत का आर्थिक संविधान कहते हैं।

इसके अंतर्गत 1959 में Bhilai, Raurkela durgapur की स्थापना की गई। औद्योगिक वृद्धि दर 3-5% प्राप्त हुई जो लक्ष्य से कही कम था

III^rd FYP :- Harrod domar strategy व Sectoral Planning जारी रखा गया नये Industry Ex HMT, Bokaro steel, Heavy electrical Ranchi, Heavy electrical Bhopal एवं Fertiliser Nangal Pharma हरिद्वार etc. की स्थापना की गई।

Socialistic pattern of economy में PSU एवं Private sector दोनों की भागीदारिता सुनिश्चित की गई। III^rd FYP में हरित क्रांति की नींव रखी गई। IADP (1961), IAAP (1964)

1961 व 65 के युद्ध के कारण आर्थिक राजस्व घाटे में वृद्धि हुआ तथा आर्थिक लक्ष्यों की प्राप्ति नहीं हुई। HYV Prog. एवं हरित क्रांति 1967 68 में प्रारंभ किया गया।

THE BOOK SHOP
Shop No.- A-35/36, Bhandari House
Dr. Mukherjee Nagar Delhi
Phone : 011-27653...

Phase II :- IV^th & V^th FYP : Sectoral planning के स्थान पर नई कार्यनीति Target area approach एवं coercive Planning था जिसमें प्रादेशिक विषमता को दूर करना सामुदायिक विकास योजना लाए गये। Command area dev. Prog. नहरी विकास के लिए एवं हरित क्रांति को उत्प्रेरित करने हेतु दिया गया। IRDP, Hill area dev. Prog, Tribal area dev. Prog. Drought Prone area dev. Prog. जैसे लक्ष्य आधारित कार्यक्रम शुरु किये गये

coercive

Phase III :- Agriculture based विकास कार्यक्रम को पुन: क्रियान्वयित किया गया जिसमें dry land agri तथा water shed mgmt Prog. को बल दिया गया।

VII th FYP में Export growth led strategy को अपनाया गया FERA से FEMA की ओर परिवर्तन एक महत्वपूर्ण कदम था। कृषि आधारित उद्योग पर विशिष्ट बल दिये गये। ग्रामीण विकास कार्यक्रम, जनसंख्या नियंत्रण संबंधी कार्यक्रम पर अतिरिक्त बल था।

Phase IV :- (1991 - वर्तमान) :- Export led growth Strategy - 1991 का New industrial Policy - उदारीकरण की नीति, निजीकरण इस strategy में विदेशी पूँजी निवेश को प्रोत्साहित किया।

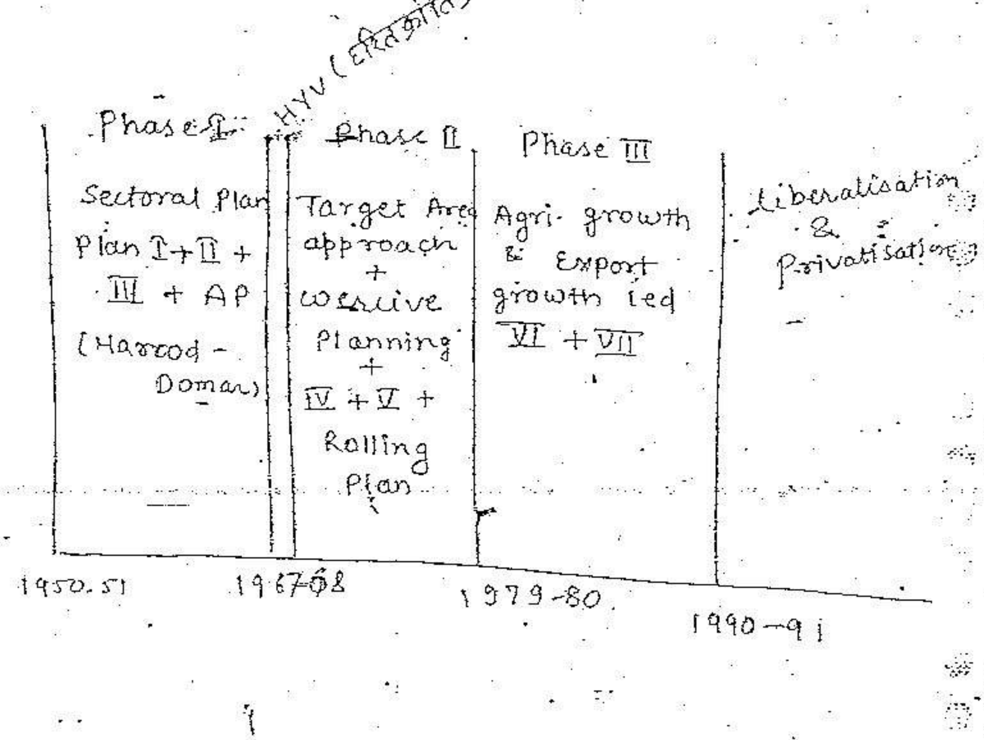

निजीकरण की नीति में Private sector के लिए equity को बढ़ाकर 50% से अधिक कर दिया गया। Disinvestment के अतिरिक्त विनियंत्रण, Delicensing, ~~विकेन्द्रीकरण~~ Xth fyp में sustainable growth Rainbow Revolution, full current account convertibility, Partial capital account convertibility जैसी रणनीतियाँ बनायी गई।

XIth Plan में inclusive growth का अर्थ है सभी समुदायों का backward regions, आर्थिक क्षेत्रों का एक समान संपोषणीय विकास।

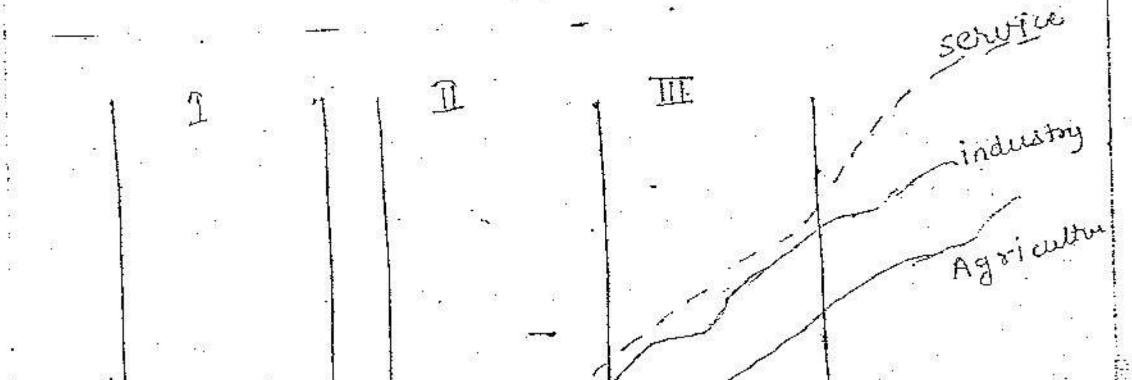

प्रादेशिक योजना एवं द्वीप क्षेत्रों का विकास :-

द्वीप क्षेत्रों के विकास संबंधी प्रथम योजना VIth FYP में Rajiv gandhi के निर्देश में बनी Island dev. authority की स्थापना। 1986 में इस उद्देश्य से की गई परन्तु यह 1997 तक defunctional रही। पंत commission ने Island dev. के लिए नि.लि. सुझाव दिये :-

a) Forest resource dev.
b) Tribal dev. Prog. पर बल
c) Energy Resource के उत्पादन पर बल
d) Ecotourism की संभावना

भारत में 2 द्वीप समूह है - अण्डमान निकोबार एवं लक्षद्वीप जिनमें क्रमशः 261 एवं 25 द्वीप है। Andaman में द्वीपों की संख्या satelite survey में 600 से अधिक देखी गई है। यहाँ continental shelf का विस्तार है अतः मत्स्य पालन एवं Petroleum तथा Natural gas की वृहद संभावना है।

इन द्वीपों पर विषुवतीय वर्षा वन 71% पर व्याप्त है। इनमें वन संसाधन प्राप्ति एवं Eco tourism दोनों की असीम संभावना है। नव्यकरणीय ऊर्जा संसाधन में wind energy, wave, Tidal energy की उच्च संभाव्यता है।

A & N पर कई जनजातियों का निवास स्थल है जिनके अस्तित्व को खतरा है। Ex - जारवा, onges, सेंटेलिज, शौम्पेन etc.

इस प्रकार द्वीपीय क्षेत्र विकास में 5 संभावनायें खुलती हैं।

1. वन संसाधनों का विकास एवं दोहन
2. समुद्री — " — " — "
3. ऊर्जा — " — " — " —
4. पर्यटन एवं Ecotourism की विकास की संभावना
5. जनजाति विकास की संभावना

Water-shed Management Programme

water shed भूगर्भिक दृष्टिकोण से एक जल विभाजक होता है जहाँ नदियों के स्रोत होते है एवं यह दो नदी basins को पृथक करता है परन्तु योजना में water-shed का अर्थ कही विस्तृत है। ws से तात्पर्य उस भू-जल-पारिस्थितिक योजना इकाई से है जहां नदियों के स्रोत अथवा catchment area एवं विभिन्न सहायक एक उभयनिष्ठ अपवहन बिन्दु पर आकर संयुक्त होती है। ws एक समेकित एवं एकीकृत विचार है जिसमें संपूर्ण catchment area सरिताओं एवं सहायक नदियों का संजाल होता है तथा इसके अंतर्गत वो संपूर्ण भू आकृतिक प्रदेश आते है जहां यह संजाल विकसित होता है अतः इसके अंतर्गत वन क्षेत्र, मानव अधिवासीय क्षेत्र मृदा क्षेत्र सभी सम्मिलित हो जाता है तथा WSM का व्यापक अर्थ भौतिक पर्यावरणीय संरक्षण के अतिरिक्त कृषि मानवीय विकास भी होता है।

ws दो प्रकार के होते है

① PAN shaped :- इसका विकास द्रुमाकार प्रतिरूप के सरिताओं के विकास से होता है। इसमें सरिताओं की संख्या अधिक होती है एवं संजाल निर्माण होता है।

② FEN Shaped :- जहाँ नदियाँ drift valley से निकल रही हो अथवा ढाल सामान्य या निम्न हो वहां FEN shaped ws बनते है।

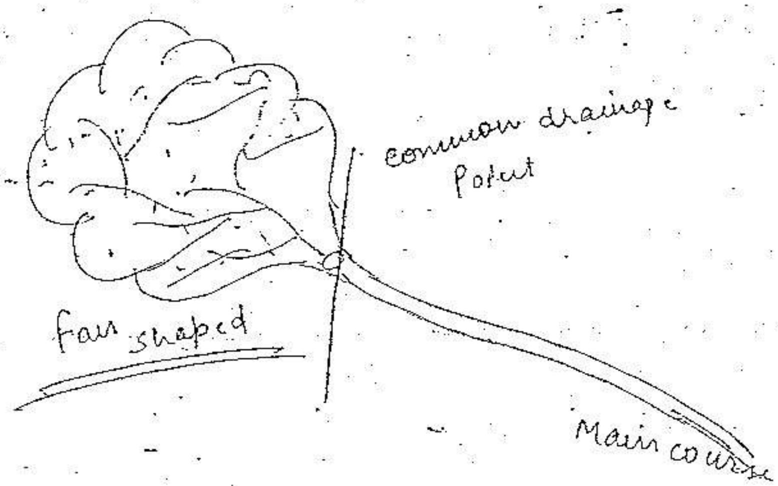

FEN Shaped

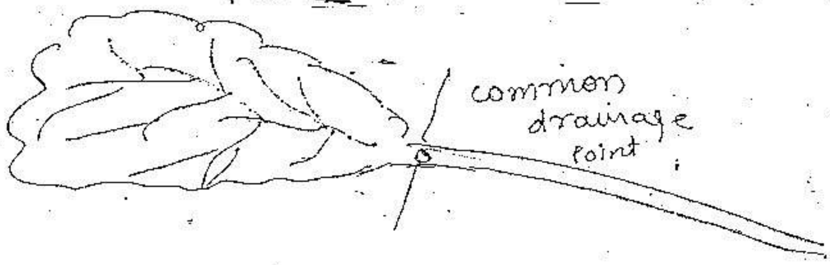

WS के कई scale होते है

a) Macro watershed :- 50 हजार hect. से अधिक क्षेत्र

b) Sub water shed :- 10 हजार से 50 हजार hect का क्षेत्र इसे Meso ws भी कहते है।

c) Milli watershed :- 1 हजार से 10 हजार hect

d) Micro. ws :- 100 hect से 1000 hect.

e) Mini ws :- 100 hect से कम

watershed की संरचना:-

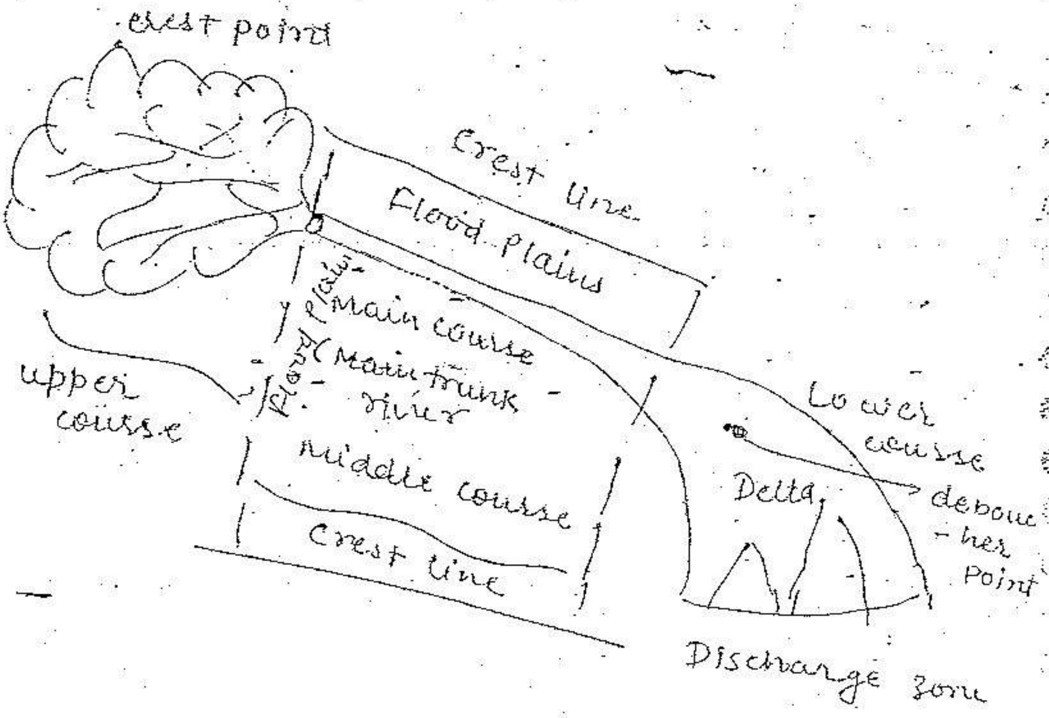

watershed mgmt के अंतर्गत

A) भूमि प्रबंधन :- इसके अंतर्गत ① slope mgmt
② मृदा प्रबंधन एवं संरक्षण
③ संरचनात्मक परिवर्तन
④ मेड़ निर्माण (Bunding)
⑤ भूस्खलन जनित समस्याओं का प्रबंधन

B) जल प्रबंधन :- ① water harvesting
② जल संरक्षण
③ Recharging (पुनः संभरण) of acquifer (जलग्राहक चट्टान)
④ भौम जल एवं सतही जल का संरक्षण।

C) Ecological & Eco mgmt :- ① वन संरक्षण
② वृक्षारोपण
③ पुनर्वनीकरण

(4) मृदा पुर्निर्माण

D) कृषि संबंधित प्रबंधन :- ① Soil Sampling
② शस्य चयन
③ फसल चक्रण
④ शस्य संयोजन
⑤ शस्य वैविध्यीकरण

C) मानव विकास :- ① रोजगार सृजन
② कृषि के वैकल्पिक आर्थिक क्रियाओं का विकास
③ शिक्षा, स्वास्थ्य संबंधी सुविधाओं का प्रसार
④ प्रशिक्षण एवं Agro technology का प्रयोग

Command Area Development Prog.

Command Area नहरी विकास क्षेत्र को कहते हैं जो Flood Plain अथवा नदियों के मध्य-भाग में विकसित होता है। Command Area वह भूमि है जहां नहरो का विस्तार एवं सिंचाई की सुविधा उपलब्ध होती है।

Command Area के अंतर्गत.

(i) Feeder Canal :- जलपरिवहन नहर है जो सिंचाई में प्रत्यक्ष भाग नही रहता। गहरा, नदी जैसा,

(ii) Inundation Canal :- यह अतिरिक्त जल को अथवा Flood water को निष्कासित करने के लिए होता है।

(iii) Irrigation canal :- ये Feeder canal से जल को खेतो पर ले जाता है।

(iv) Channel :- छोटी नहरें जो सिंचाई नहरो से निकाली जाती है।

(v) Drains :- लघु नहरें जो Channels से निकाली जाती है।

(vi) Gully :- खेतों तक सिंचाई जल पहुँचाने वाले छोटी नालिकायें होती है।

इस प्रकार Command Area विभिन्न नहरों का संजाल होता है।

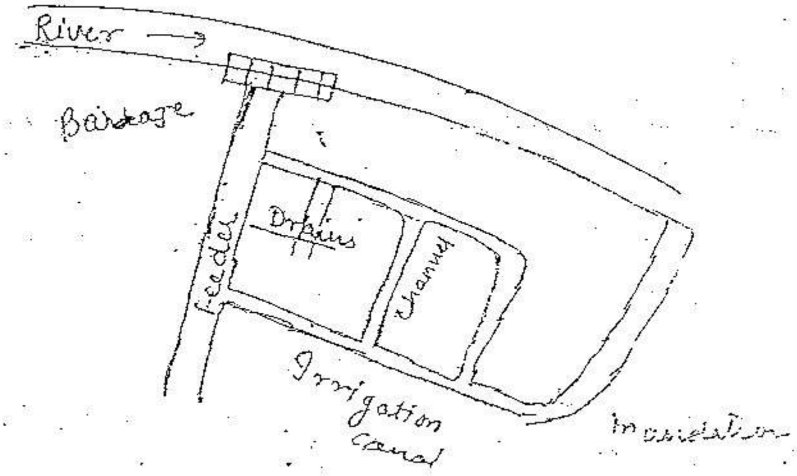

भारत में CADP Prog. 1974 में IV[th] FYP के अंतर्गत लागू किये गये जिनका उद्देश्य था –

① हरित क्रांति को प्रोत्साहित करना
② ~~Thrust~~ हरित क्रांति के क्षेत्र में विस्तार
③ उच्च उत्पादकता की प्राप्ति

CADP के अंतर्गत 2 मुख्य उपागम थे जिन्हें OFDs कहा जाता है।

On Farm Development Project :- ① मेड निर्माण
② सिंचाई नालिकाओं का निर्माण
③ मृदा परीक्षण।
④ फसल चयन
⑤ चकबंदी
⑥ HYV का प्रयोग।
⑦ chemical fertiliser का प्रयोग।
⑧ Pesticide व Vediside का प्रयोग

OFF Farm Dev. Project :- ① बाजारीकरण
② विपणन
③ Rural credit
④ मशीनीकरण
⑤ रोड निर्माण, एवं विद्युतीकरण
⑥ भण्डारण
⑦ MSP's etc.

19/09/2012
Noon

- Rostow Model
- Hill Area development
- Tribal Area development
- Drought prone Area development

Rostow model :- ये मॉडल गैर स्थानिक कालिक मॉडल है जो आर्थिक वृद्धि को सामाजिक सांस्कृतिक राजनैतिक एवं औद्योगिक क्रांतियों एवं प्रौद्योगिकी में परिवर्तन से संबंधित करता है।

Europe के आर्थिक विकास पर आधारित यह model मानव के मूल प्रवृत्तियों को चिन्हित करता है तथा विकास के सामाजिक एवं आर्थिक कारको एवं परिवर्तनशीलता को विश्लेषित करता है। मानव की मूल प्रवृत्तियाँ नि. लि. है।

i) Propencity of Material growth (भौतिक विकास की कामना)

ii) उपभोग करने की कामना

iii) विज्ञान के खोज की कामना

iv) विज्ञान का आर्थिक वृद्धि में उपयोग

v) बच्चे पैदा करने की कामना

vi) Social cohesiveness (सामाजिक संसजन)

Rostow ने आर्थिक वृद्धि को क्रमबद्ध काल आधारित, प्रक्रिया आधारित एवं सामाजिक परिवर्तनों विज्ञान की क्रान्ति से संबंधित माना है।

मूलभूत अवधारणायें :- (i) परम्परागत समाज में अधिशेष की उत्पत्ति नहीं होती तथा रूढ़िवादिता के कारण stagnency (स्थिरता) होती है।

(ii) वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिकी का विकास रूढ़िवादिता, धर्मान्धता को तोड़ता है एवं आर्थिक क्रान्ति को

प्रेरित करता है।

(3) कुल GDP का 10-15% पुनर्निवेश आर्थिक प्रगति को तीव्र करने के लिए आवश्यक है।

(4) Democratic ideals एवं राजनैतिक तंत्र आर्थिक प्रगति के उत्प्रेरक होते हैं।

(5) विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में क्रांति से उपभोक्तावाद में वृद्धि होती है।

Rostow का प्रक्रिया संबंधी विश्लेषण:-

Auterky
↓
बंद अर्थव्यवस्था

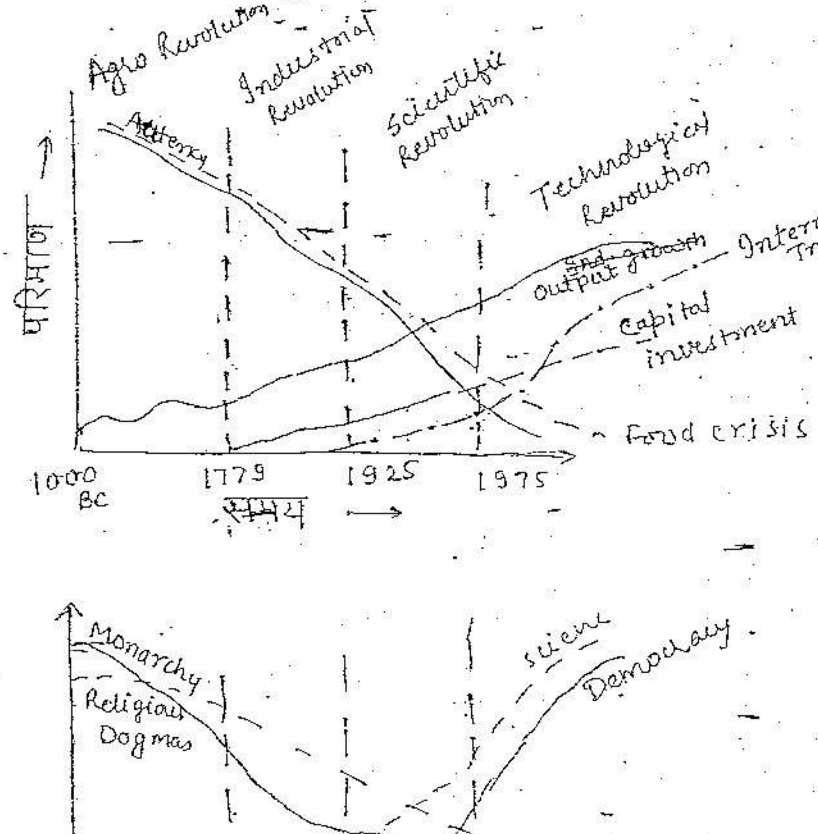

Religious
Dogmas
↓
धर्मान्धता

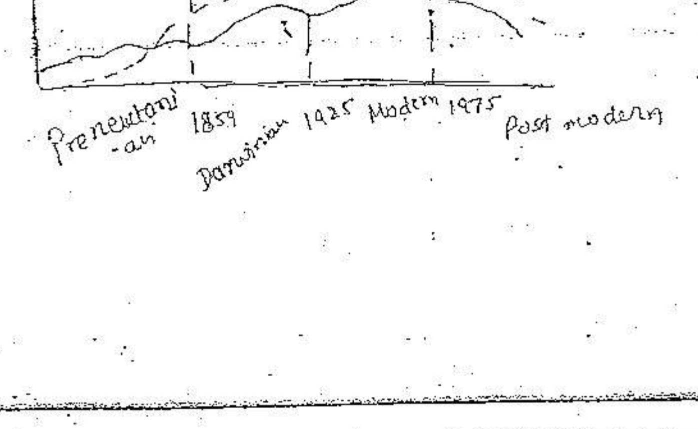

प्रथम चरण :- Traditional Society (परंपरागत समाज)

कृषि आधारित समाज, धार्मिक अंधविश्वास से युक्त निम्न उत्पादकता, कृषि अधिशेष का धार्मिक कार्यों में प्रयोग, आर्थिक वृद्धि, स्थैतिक निर्वहन कृषि प्रणाली राजतंत्र, वंशानुगत शासन व्यवस्था, 1779 के पूर्व के काल को Europe में परंपरागत समाज माना गया है।

द्वितीय चरण :- उत्प्रस्थान की पूर्व शर्तें :- परम्परागत समाज में स्वस्फूर्त क्रियाओं से उत्प्रेरकता बढ़ती है। जिससे आर्थिक प्रगति प्रारंभ होता है।

Ex - ① राजतंत्र का अंत एवं नये प्रशासनिक तंत्र जैसे प्रजातंत्र एवं लोक जन आधारित व्यवस्थाये (साम्यवाद)

② नये धर्म का उदय अथवा धर्म का परिवर्तन जो नवीन वैज्ञानिक सोच पर आधारित हो और जो रूढ़िवादिता का अंत करे।

③ औद्योगिक क्रांति जो किसी नवीन प्रौद्योगिकी पर आधारित हो।

④ पुनर्जागरण जो सामाजिक व्यवस्था में परिवर्तन उत्पन्न करे शिक्षा, ज्ञान, अधिकार, कर्तव्य, विज्ञान etc को बढ़ाये।

कृषि उत्पादकता में वृद्धि होती है खाद्य संकट खत्म होता है आत्मनिर्भरता बढ़ती है। कृषि मे अधिशेष की प्राप्ति अधिशेष का उद्योग में निवेश होता है।

तृतीय चरण :- Take off (उत्प्रस्थान) :- अर्थव्यवस्थाऐं तीव्र दर से प्रगति करती है यदि -

a) वैज्ञानिक एवं औद्योगिक क्रांतियाँ सहगामी होती
b) GDP का 10-20% पूँजी निवेश में उपयुक्त होता।
c) प्रजातंत्र, उदारीकरण जैसे आधुनिक विचारधारा समाज को नियंत्रित करता है।

उत्प्रस्थान नि. लि. तथ्यों पर आधारित है।

a) प्रभावी उद्योगो का विकास जो आधारभूत एवं भारी उद्योग है तथा भारी मात्रा में रोजगार सृजन करते है।
b) द्वितीयक अर्थव्यवस्थाओं का विकास जिसका अर्थ है Railway network एवं roadways का विकास
c) व्युत्पन्न Sector का विकास जो तृतीयक अर्थव्यवस्थाये है Ex- सेवा क्षेत्र का विकास, सामाजिक एवं आर्थिक अवसंरचना का निर्माण

चतुर्थ चरण :- परिपक्वता की ओर :- इस अवस्था में प्रजातांत्रिक मूल्य, राजनैतिक संप्रभुता वैज्ञानिक प्रगति, प्रौद्योगिकी का प्रयोग स्थापित हो जाता है तथा वृहद उद्योगों के अग्रगामी-पश्चगामी उद्योगों का विकास, समूहन प्रभाव, GDP का 10-15% पुर्नविनेश अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में बढोतरी, L.P. अर्थव्यवस्था का व्यापक विकास, बहुआयामी विकास।

L- Liberalisation
P- Privatisation

पंचम चरण :- Mass consumption (सामूहिक उपभोग)

अर्थव्यवस्थायें विशाल surplus का ~~विशेष~~ निर्माण करती है तथा समाज व्यक्तिपरक, उपभोग परक, एवं मनोरंजन तथा विश्व के राजनीति में एवं अन्य देशों के आंतरिक मामलो में हस्तक्षेप की प्रवृत्तियाँ अपनी संप्रभुता का विस्तार

विश्व में आर्थिक प्रभाव से फैलाने की प्रवृत्ति अंतर्राष्ट्रीय Trade में आधिपत्य जैसे दृश्य उभरते हैं।

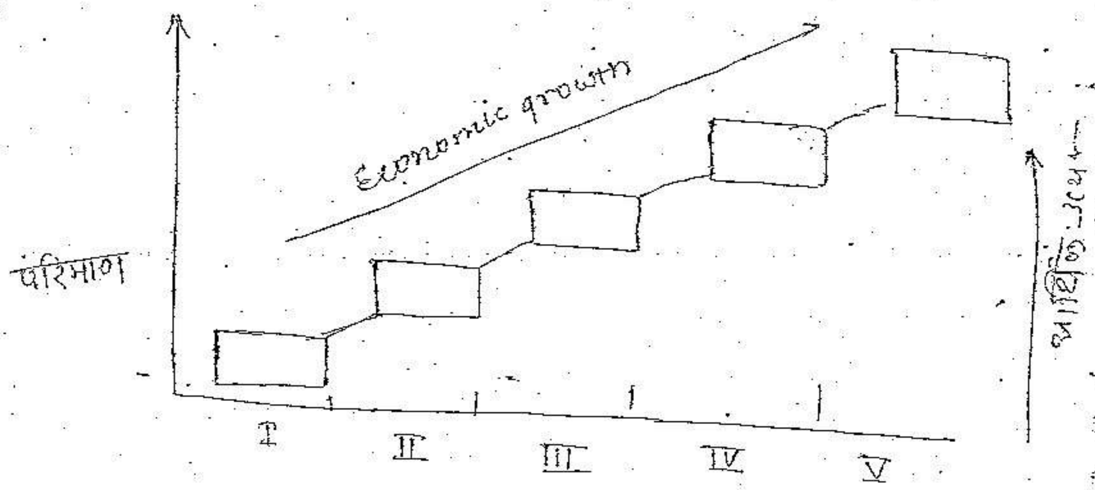

समालोचना :- ऐसा प्रतीत होता है कि यह मॉडल वायुयान नियमों पर आधारित है Ex उत्प्रस्थान etc. जो निश्चित रूप से प्रत्येक अर्थव्यवस्था में लागू नहीं होता वहाँ के जनसंख्या एवं सांस्कृतिक तंत्र के द्वारा प्रभावित होता है।

इन्होंने पूँजी पुनर्निवेश GDP का 10-15% माना जिसका कोई आधार नहीं है। यह मॉडल नियतिवादी एवं पूर्व घोषणा से युक्त है जो उचित नहीं है।

यह मॉडल Europe के आर्थिक सामाजिक परिपेक्ष्य में बना है अतः Afroasia के देशों में लागू नहीं होता। इस मॉडल की अवस्थायें अनुक्रमित रूप से प्राप्त हो यह कई Ex. में अनुचित जान पड़ता है। Australia, NZ में Stage 1 के बाद direct Stage V प्राप्त हुआ क्योंकि ये श्वेत लोगों के प्रवसन से बने देश है जो आर्थिक वृद्धि को साथ लाये हैं।

कुछ देश जहाँ उपभोक्तावाद stage V का है परन्तु धार्मिक राजनैतिक तंत्र stage I का है।
Ex- पश्चिम एशिया के देश।

कुछ देश Ex- भारत जनसंख्या वृद्धि से ग्रसित है जिसमें Take off का stage प्राप्त नहीं होता। क्योंकि आर्थिक प्रगति के लाभ जनसंख्या में ही विलीन हो जाती है।

PhD मानविकीय

Indian Economy Mishra & Puri

Chandra प्रादेशिक नियोजन

Hill Area Development (Short note)

HADP 1965-66 में जनजातीय विकास क्षेत्र कार्यक्रम के अंतर्गत संकल्पित किया गया। तथा इस कार्यक्रम के अंतर्गत उन विशिष्ट पहाडी क्षेत्रों को लिया गया जहां पर-

a) ऊँचाई 300-600 m रहे

b) पर्यावरणीय दृष्टिकोण से भंगुर (fragile)

c) रोपण कृषि प्रणालियों से प्रभावित

d) जनजातिय निवास स्थल

e) पर्यावरणीय समस्याओं युक्त Ex - निर्वनीकरण, अवैज्ञानिक कृषि etc.

HA, IV th FYP में क्रियान्वित की गई तथा इसके अंतर्गत 4 क्षेत्र ग्रहण किये गये -

a) असम की पहाडियाँ जिसमें North cachar से Miri तक

b) Darjelling Hills

c) Uttarakhand के 8 पहाडी क्षेत्र Ex- चमोली, रूद्रप्रयाग, etc.

d) नीलगिरी की पहाडियाँ

a) असम की पहाडी :- चाय के बागान एवं मिस्मी, मिरी, एबोर, डफला जनजातियों का निवास

b) दार्जिलिंग :- चायके बगान, डोप्सा, लेप्चा जैसी जनजातियां

c) UK :- कृषि - चावल, मक्का जौं तथा फल कृषि बागवानी चाय, जोनसारी जनजाति, घोटिया, थारू जनजाति

d> नीलगिरि :- चाय के बागान, आलू (पुर्तगालियों के द्वारा)
टोडा जनजाति, Qralis (क्यूरलिन) etc.

इस योजना के अंतर्गत -

a> Tribal development Prog.

b> पर्यावरणीय संरक्षण

c> आर्थिक पिछड़ेपन को दूर करना

d> आपदा प्रबंधन

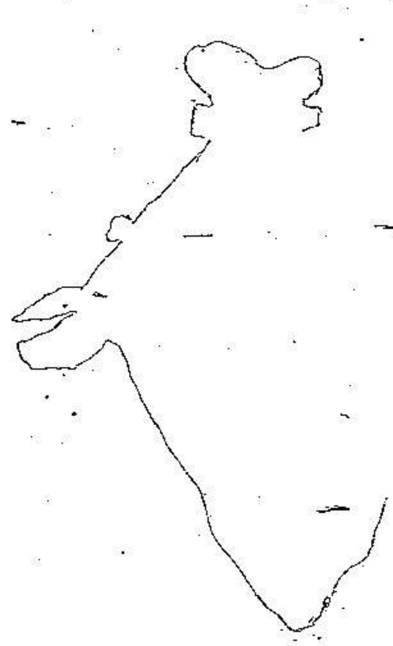

Tribal area Development :- 1965-66 में जनजाति विकास कार्यक्रम की रूपरेखा रखी गई। Tribe शब्द वैधानिक भाषा में अपरिभाषित है।

समाजशास्त्रीय परिभाषा के अनुसार जनजाति एक नृजातीय एवं सांस्कृतिक मानव समूह है जो जटिल एवं भू-भौतिक तथा कठिन जलवायविक परिस्थितियों में समाज की मुख्य धारा से दूर निवास करते हैं तथा अपनी विलक्षण सांस्कृतिक नृजातीय संरचना से चिन्हित किये जाते हैं। जनजातीय विकास कार्यक्रम उनके विशिष्ट सामाजिक आर्थिक एवं भौगोलिक दशाओं के परिपेक्ष्य में शामिल किया गया जिसका उद्देश्य है ① आर्थिक प्रगति है जो उनके सांस्कृतिक विरासत में बिना हस्तक्षेप किये संभव हो।

② पर्यावरणीय संरक्षण
③ विज्ञान एवं प्रगति के मुख्य धारा में प्रवेश
④ आर्थिक सामाजिक शोषण से संरक्षण
⑤ वन संसाधन एवं खनिज संसाधन से प्राप्त आर्थिक लाभों का जनजातियों में न्यायोचित वितरण।

भारत की मुख्य जनजातियाँ :

① गोंड :- सबसे बड़ी जनजाति, भाषा - गोंडी,
मानव प्रजाति - Proto Australoid
पशुचारण आर्थिक क्रिया
मुख्य विस्तार - MP, CG, समीपवर्ती महाराष्ट्र

② भील - दक्षिण, SE Raj, निकटवर्ती Gujrat, MP.
Proto australoid मानव प्रजाति
भाषा भीली, कृषक, भेड़ पालक
भील शब्द का अर्थ है ~~भील~~ तीर का नोंक,
महाराणा प्रताप (एकलव्य के वंशज)

(margin notes: ग्रीष्म; Sequence wise याद करना)

③ **संथाल** :- CNP, राजमहल Hills, समीपवर्ती, Assam Hills

भाषा - संथाली

एक मात्र जनजाति जिनकी स्वयं की लिपि है

Olchiki

Youth dormatory system - Ghotul

आर्थिक क्रिया - कृषि

④ **मुण्डा** :- झारखण्ड, समीपवर्ती-CG, उडीसा

भाषा - मुण्डारी

कृषक, पशुपालक

⑤ ~~Khoo~~ **Oraon** :- झारखण्ड की जनजाति

कुरुख

पशुपालक, महुआ पेय पदार्थ

ग्रामीण देवता - ठाकुर

⑥ **मीणा (Meena)** :- मीन शब्द से बना है। राजस्थान

अर्जुन के वंशज बतलाते हैं।

भाषा - खडी हिन्दी :- मत्स्य पुराण

⑦ **Khond** :- उत्तरी आंध्र प्रदेश, भारत का सबसे पुरानी जनजाति, इनका वर्णन स्कन्द पुराण में मिलता है। भाषा - खोंडी

Tribal Region :-

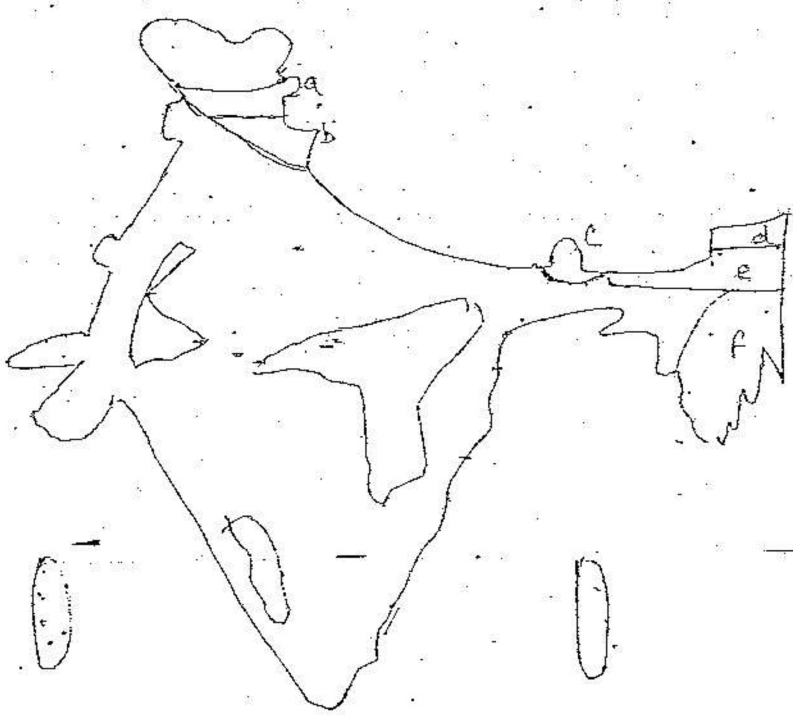

1) Western Himalayan Region :- a) Himanchal Himalaya

पीरपंजाल पर गुज्जर एवं बकरवाल

हिमांचल में भोटिया

b) कुमायुँ हिमालय - थारू, जौनसारी, भोटिया

c) Sikkim - लेप्चा

d) Arunanchal - Aphadani, Dafla

e) Assam Himalaya - Mishmi, Miri, Abhor

f) ~~मणिपुर~~ पूर्वांचल पहाड़ी - नागा, कूकी, मीजो, मिकिर, रेंगमा, गारो, खासी, जैंतिया

2) Eastern Plateau & Hill :- Jharkhand Orissa, CG, दण्डकारण्य

मालपहाड़ी, गोंड, बैगा, संथाल, Oraon, etc.

3) Western Hilly Region :- Warlis, शहरिया, गोंड,

4) Western Ghats :- इसके अंतर्गत Doda, कुरालीज, कदर
पुलानी (पालनी Hills पर) (Kochi ...)

5) Island Region :- Andaman & Nicobar में;
Jarwa, सैंटिनीज, शोम्पैन, Onges,
अण्डमानी, निकोबारी

लक्षद्वीप पर 99% Muslim tribe है।
मलयाली बोलने वाले जो Northern Malabar से
है।
Mopla

Tribal Problems :-

आर्थिक :- ① निम्न आय
② निम्न श्रम दर

सामाजिक समस्या :- ① मद्यपान
② वेश्यावृत्ति
③ भुखमरी
④ दुर्भिक्ष
⑤ स्वास्थ्य संबंधी
⑥ बाह्य हस्तक्षेप

जनांककीय समस्या :- ① उच्च जन्म दर
② उच्च मृत्यु दर
③ High dependency ratio
④ शिक्षा

पर्यावरणीय समस्या :- ① उत्खनन
② निर्वनीकरण
③ अवैज्ञानिक कृषि
④ झूम कृषि
⑤ मृदा अपरदन, सूखा, बाढ़
⑥ भूस्खलन

सांस्कृतिक समस्या :- ① अंधविश्वास
② धर्मान्धता
③ सामाजिक जड़त्व
④ मुख्य धारा से विलगत्व

समाधान :-

19/09/2012
Evening

Paper - II - संस्कृति + जनसंख्या

भारत की प्रजातियाँ।
भाषा
धर्म
नृजातीयता
सांस्कृतिक प्रदेश

विश्व के सांस्कृतिक प्रदेश

Malthus, Marx, Dumont, Saddler, Ricardo,

Demographic Transition Theory

(Paper - I - Perspective Model & Theory)

भारत की प्रजाति :- प्रजाति मानव का biological distinction (जैविक विभेद) है। जिसका आंतरिक गुणवत्ता से कोई संबंध नहीं है। प्रजाति विभेद का उद्देश्य शैक्षणिक है जो रंगभेद को उत्पन्न नहीं करता। भारत में मुख्य रूप से 6 प्रजातियों ने प्रवेश किया है तथा आपसी ~~मिश्रण~~ से एक नवीन प्रजाति जिसे Indian Race अथवा Brown Race कहा जाता है, उत्पन्न हुआ। भारत को 'Melting Pot of the Races' कहते हैं परन्तु कुछ जाति विशेषों में एवं प्रांत विशेषों में प्रजातियों के मुख्य अभिलक्षण प्राप्त होते हैं।

(1) Negrito :- प्रथम प्रजाति, इथोपिया से आई, Nigro के छोटे रूप, वर्तमान में कदर (कोच्चि), पुलानी (पालनी Hills पर), अण्डमान की कई प्रजाति अण्डमानी, सेंटेलीज, शौम्पेन, जार्वा etc Negrito है।

(2) Protoaustraloid :- from North west frontier, Egypt व फिलिस्तीन से Migration हुआ है। इनका skin - deep brown होता है। ये Nigroid की तरह होता है परन्तु बाल लहरदार होता है।

वर्तमान में मध्य एवं पूर्वी पठारों के जनजाति।

(3) भूमध्य सागरीय :- भारत की मूल प्रजाति (70% लोग)

skin ⇒ brown से deep brown

ये मूलतः दक्षिण भारतीय जनसंख्या में फैला है तथा उत्तर भारत में SC व OBC group में dominent हैं। ये ही सिन्धु घाटी सभ्यता के जनक तथा सनातन हिन्दु धर्म के जनक।

(4) पश्चिमी बडे सिर वाले
Western :- इसके 3 उपवर्ग है - गोरे रंग के बडे सिर वाले

a> dinarics
b> Arminoid
c> Alpinoid

चेकोस्लोवाकिया Dinarics - Assam, Bengal, orissa के ब्राह्मण वर्ग

Arminia - Arminoid - कश्मीरी, डोगरा (जम्मू)

आल्पस पर्वत - Alpinoid - कोंकणी ब्राह्मण, पारसी समुदाय

(5) Mongloid :- इसमे 2 उपवर्ग है
→ Yellow skin
→ Strait hair

a> Sino-Tibettan - लेह - लद्दाख, UK,
↳ sikkim & Arunanchal

b> Indo-malayan - N E India

(6) Nordics:- तथाकथित आर्य समूह, fair complexent, गंगा के मैदान पर नर्मदा तक, आर्यावर्त क्षेत्र

Race
- Caucasoid
  - पश्चिमी बड़े सिर वाले
  - Nordic
  - Mediterranean
  - Slovoc
- Negroid
- Mongloid
- Protoaustrali

इनका मुख्य विस्तार North western india तथा Gangetic basin में प्राप्त होता है।

Ex- Punjabi's, जाट (अंतिम हिन्दू community जो Afghans से migrate किया) Rajput (राजस्थान), बुंदेलखण्ड, भुमिहार, चितपावन (B.G. Tilak) नम्बूदरी ब्राह्मण (केरल), अय्यर+आयंगर (TN) → हेमा मालिनी

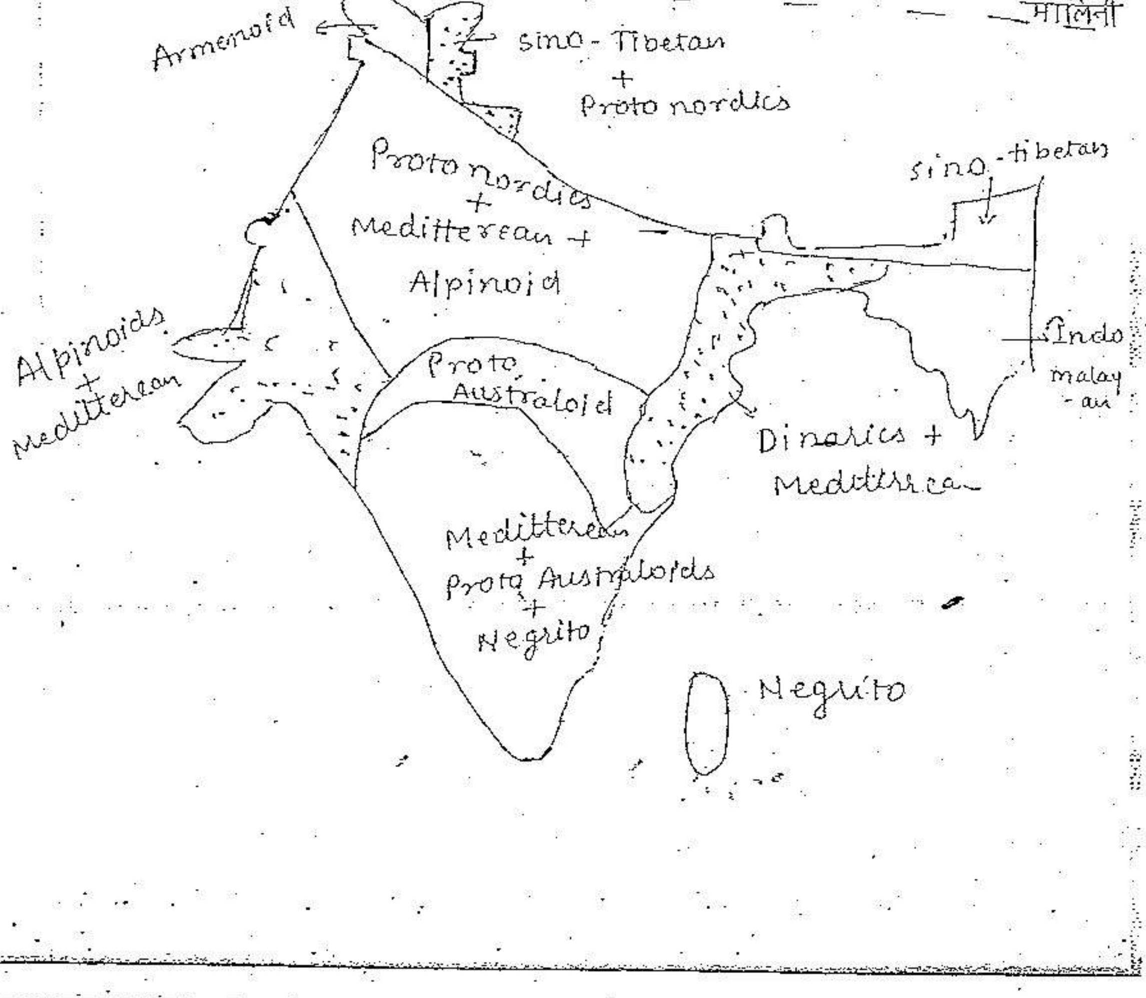

भारत की भाषायें :- भारत में 188 भाषाये एवं 1100 से अधिक बोलियाँ है। भाषाओं के grammer script होते है जबकि बोली का script, grammer व साहित्य नही होता। भारत में संवैधानिक रूप से 22 भाषा है।

भाषा :- भाषा एक ध्वनि का समूह है अथवा वर्णों का (समुच्च) कुल योग है। जिससे कोई नृजातीय वर्ग अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करता है तथा यह एक सम्प्रेषण का माध्यम है। भाषा परिवर्तनशील होती है। स्थान एवं काल के परिपेक्ष्य में बदलती है।

~~यह भाष~~ भारत की मूल 4 भाषायी समूह है

(1) Indo-Aryan (आर्य भाषी समूह) :- इसके 2 उपवर्ग है

- a) Dardic → शीना (Shina), Kufristani
  - → कश्मीर में बोली जाने वाली भाषा
- b) संस्कृत

b) Sanskrit → Pali, Prakrat] अपभ्रंश

- अपभ्रंश → पैशाची, मागधी, अर्धमागधी
  - मागधी → पूर्वी हिन्दी, Bengali, उडिया, असमी → Eastern India
  - अर्धमागधी → राजस्थानी, पंजाबी, गुजराती, मराठी → West. Ind.

(2) Dravidian - मलयालम, कन्नड, तमिल, तेलगु
↳ 60% संस्कृत

तेलगु - Italian of the east.
↳ सबसे समृद्ध भाषा (ज्यादा साहित्य मिलता है) - 40-45% संस्कृत

तमिल → Purest but 25% भाषा संस्कृत

कन्नड - 40-45% संस्कृत + nt.

(3) Nisad :- पहाड़ी भाषायें (मध्य भारत, पूर्वी पठार)
जनजातीय भाषा (गोंडी, संथाली etc)

(4) Kirat :- NE India की भाषा

THE BOOK SHOP
Shop No.- A-35/36, Bhandari House
Dr. Mukherjee Nagar Delhi-09
Phone : 011-27652...

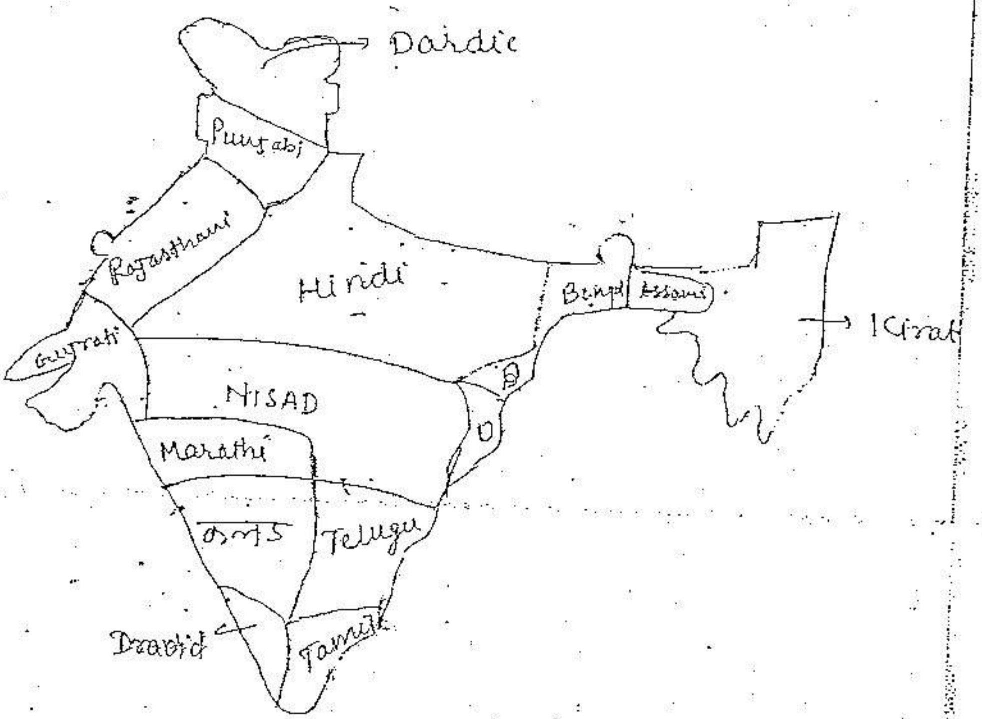

धर्म :- धर्म शब्द का अर्थ है 'to relegare'
इसका अर्थ है धारण करना / ग्रहण करना / अनुपालन करना। उपनिषद में धर्म का अर्थ है 'धारयति इति धर्मम्' अर्थात् जिसे धारण किया जाये वह धर्म है। धर्म का अर्थ प्रकृति के नियमों का पालन है। विरुद्ध आचरण अधर्म कहलाता है।

Ex.- अग्नि का धर्म है जलाना, जल का धर्म है शीतलता मानव धर्म है मानवीयता -

Jainism } उपनिषद पर
Buddhism } based

भारत मे सभी धर्म प्राप्त होते हैं

1. ब्रह्मवाद (Hinduism / Bramhanism) :-
2. इस्लाम
3. Budhism
4. Jainism
5. christian
6. Zorustrianism (पारसी)
7. Judaism (यहूदी)

भारत के सांस्कृतिक प्रदेश

1. Ladakhi Buddhis
2. Kashmiri
3. Kamauni
4. Punjabi

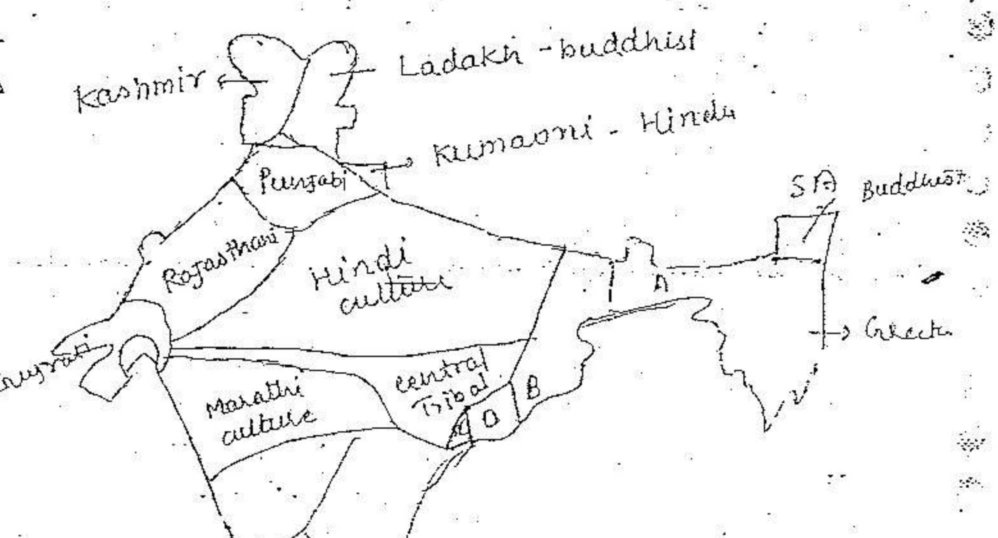

(5) Rajasthani
- मेवाती
- हाडोती
- मेवाडी
- मारवाडी

(6) Gujrat
- Kachi
- सौराष्ट्री
- काठियावाडी

(7) Hindi culture
- मालवी
- बुंदेलखण्डी
- अवधी
- भोजपुरी
- मैथिली
- मगही
- बघेलखण्ड

(8) Central Tribal culture —

(9) पूर्वी culture
- असमी
- बंगाली
- उड़िया

(10) ~~Sikkim Bu~~ Sikkim - Arunachal Buddhist culture

(11) Greater Naga culture.

(12) Marathi culture - कोंकणी
मराठवाडा
खानदेश (तापीपूर्णा Valley में)
विदर्भ

(13) Southern culture : तेलगु, तमिल, कन्नड, मलयालम

विश्व के सांस्कृतिक प्रदेश

<u>संस्कृति</u> – संस्कृति किसी मानव समूह के विश्वास, नैतिक मूल्य, आस्था, रीति-रिवाज, धार्मिक उपालम्भ (मान्यता) एवं जीवन शैली, रहन-सहन, खान-पान, पर्यावरणीय चिंतन तथा प्रौद्योगिकी का समेकित स्वरूप है। संस्कृतियों के एतिहासिक निरंतरता होती है। सभ्यता स्वल्प हो जाती है परन्तु संस्कृति जीवित रहती है क्योंकि संस्कृति एक गतिशील संकल्पना है।

संस्कृतियों के तत्त्व हजारो वर्षों बाद भी किसी-न किसी रूप में व्याप्त रहते है।

संस्कृति ~~भारत~~ में शब्द के द्वारा सिर्फ सामाजिक एवं धार्मिक तत्त्वों का ही ज्ञान नही होता बल्कि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी भी ~~संस्कृतियों~~ को निर्धारित करती है

Ex- पुरापाषाण काल, ताम्रयुग, प्रौद्योगिकी युग

संस्कृति शब्द के अंतर्गत PCI, जीवन स्तर मानव पर्यावरण संबंध एवं विज्ञान के प्रयोगों को भी अंतर्निहित किया जाता है।

<u>संस्कृति के क्षेत्रीय विश्लेषण</u>

1. संस्कृति गर्भगृह (Hearth) → cultural Hearth है।
2. संस्कृति केन्द्र (core)
3. सांस्कृतिक प्रदेश (Region)
4. सांस्कृतिक परिमण्डल (Realm)

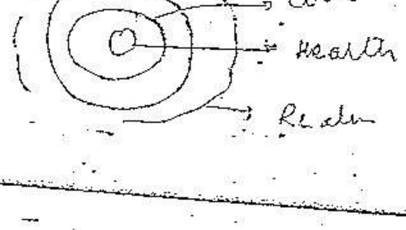

विश्व के सांस्कृतिक प्रदेशों का सामान्य वर्गीकरण - Toyambee ने किया

Anthropological geographical वर्गीकरण Brock & webb ने प्रस्तुत किया।

(A) ~~Occi~~ Oxidental classification :- उपवर्ग → christian dominio's

a) Anglo American

b) Latin ——

c) Australasian

d) European → (i) North western Protestant
→ (ii) Eastern slavik orthodox (पूर्वी यूरोप, रूस)
→ (iii) Southern Latin catholic

e) South - African culture —

(B). Oriental culture :- (a) Dry Realm (Islamic Realm) N. Africa West asia, Afghanistan

(b) Indic (-Hindu Realm) - South asia, Maldiv, Pakistan
जीने की पद्धति

(c) Transitional culture / cultural cross road / South East asian culture :

(d) East & Far East culture - China, Japan, Korea

(C) Meso African :- मध्य अफ्रीकी भाग → Christianity, Islam, Tribalism धर्म प्रचलित होते हैं।

(D) Minor culture :-

① Siberian Tribal culture
② Central Asian culture

(E) Aborted culture :

① माया सभ्यता
② Aztec culture

अलोक रंजन
भूगोल
क्लास नोट्स
2012 -13

20/09/2012
Morning

Population Theory

Malthus का जनसंख्या संबंधी सिद्धान्त:- ये नीतिवादी आदर्शवादी अभिमत है जो Europe में औद्योगिकी क्रांति के परिपेक्ष्य में उत्पन्न मॉडल है।

यह एक Predictive (पूर्वघोषणाकारी) model है। इसमें जनसंख्या वृद्धि एवं खाद्यान्न उत्पत्ति के सिद्धान्तों के अंतर्संबंधों को स्थापित किया गया है। Malthus की संकल्पना अर्थशास्त्रीय दृष्टिकोण से असिद्ध है। परन्तु कल्याणवाद की भावना से ओत-प्रोत है अतः Malthus के आसिद्धियों में सिद्धता है।

— Malthus का उद्देश्य Europe में जनसंख्या विस्फोट को देखकर भविष्य के आर्थिक संकट की घोषणा करना है। वास्तव में कल्याणवाद से प्रेरित यह भावना Europe के लिए चेतावनी है।

Malthus ने अपने अभिमत में मानव के 2 मूल प्रवृत्तियों को दर्शाया

a) Passion for food
b) Passion for sex.

प्रथम प्रवृत्ति के कारण भौतिक विकास आर्थिक तंत्र का निर्माण, पूँजीवाद का उदय परन्तु Passion for sex को जनसंख्या विस्फोट का कारण मानते है

इन्होने जनसंख्या वृद्धि दर को Geometric mean से दर्शाया है।

P = 1, 2, 4, 8, 16, 32, 64, 128, 256, ...

जबकि खाद्यान्न वृद्धि दर को Airthmetic mean से बतलाया है।

F = { 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9, ... }

जनसंख्या अपने आप को २५ वर्षों में दुगुनी करती है।

इस प्रकार 200 वर्षों के पश्चात देश की जनसंख्या एवं खाद्यान्न का Ratio 256 : 9 होता है जो क्रांतिक बिन्दु अथवा Threshold है। जिसके बाद

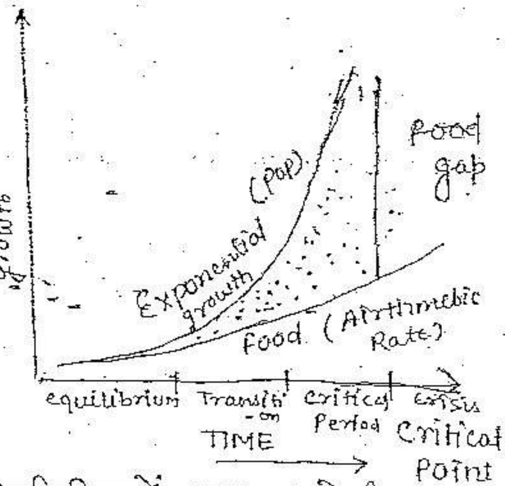

आर्थिक संकट एवं अन्य विभीषिकायें उत्पन्न होगी तथा पूर्व औद्योगिक काल जैसी दशायें पुनः कायम हो जायेगी तथा समाज पुनः निम्न स्तरीय जीवन प्रणाली में प्रवेश करेगा।

Malthus ने यह इससे बचने / अथवा जनसंख्या नियंत्रण करने के 2 उपागम बतलाये :

a) Positive checks (सकारात्मक अवरोधक) :- इसके अंतर्गत इन्होने भूकंप, महामारी, गृहयुद्ध, विभत्स्य सामाजिक नियम बतलाये

b) Preventive checks :- ① नैतिक :-- ब्रह्मचर्य
→ विवाह में विलंब
→ ध्यान, self control

② अनैतिक :- → परस्त्रीगमन (Adultry)
→ वेश्यावृत्ति (Prostitution)

→

Malthus पूँजीवाद के समर्थक है क्योंकि पूँजीवादी व्यवस्था में ही संचयित धन का पुर्ननिवेश होता है। नये उद्योग क्रियाशील होते है अतः रोजगार सृजन, आर्थिक वृद्धि होती है। ②

इन्होने जनसंख्या वृद्धि का कारण पूँजीवादी व्यवस्था माना है जिसमें श्रमिक वर्ग जनसंख्या विस्फोट करते है जो अधिक मजदूरी के उपार्जन के उद्देश्य से होता है। Malthus ने जनसंख्या नियंत्रण के लिए wage rate में वृद्धि को भी माना है।

आलोचना:- ① संतानोत्पत्ति मानव का जैविक प्रवृत्ति नही है बल्कि सामाजिक प्रवृत्ति है तथा Passion for sex का संतानोत्पत्ति से कोई संबंध नही है।

② Malthus ने positive checks पर अधिक बल दिया जो उचित नही है। भूकंप एवं प्राकृतिक आपदा का जनसंख्या वृद्धि से कोई संबंध नही होता।

③ AP एवं GP जैसी कल्पनाशील विचार अवैज्ञानिक है। Malthus ने मानव के प्रौद्योगिकी की अवहेलना की है।

④ 25 वर्ष में जनसंख्या दोगुनी नहीं होती। Bangladesh में जनसंख्या 17 वर्ष में ही दोगुनी हो जाती है।
भारत - 30 वर्ष
कुछ देशो की जनसंख्या घट रही है।
Ex- Japan, Russia, Austria, Germany.

⑤ 200 वर्षों के बाद critical point की प्राप्ति भी एक काल्पनिक विचार है। इसके बाद अचानक

विश्व संकट उत्पन्न होगा।

मार्क्स का विचार :- मार्क्स ने अपनी पुस्तक 'Das capital' में जनसंख्या संबंधी अभिमत प्रस्तुत किये है। इन्होंने जनसंख्या संबंधी कोई स्वतंत्र सिद्धान्त स्थापित नही किया है।

Marx ने जनसंख्या वृद्धि का कारण पूँजीवादी अर्थव्यवस्था को माना है। पूँजीवादी व्यवस्था ऐतिहासिक भौतिकतावाद पर संकाल्पित है। समाज में २ वर्ग पूँजीपति एवं सर्वहारा Historical Materialism के कारण उत्पन्न होते है। तथा जनसंख्या विस्फोट सर्वहारा वर्ग में होता है क्योंकि पूँजीपति में धन संचय की प्रवृत्तियाँ होती है। तथा वह विलासितापूर्ण जीवन के लिए संतानोत्पत्ति की कामना नही करता। पूँजी का विकास एवं पुर्ननिवेश उसकी मूल प्रवृत्ति होती है। तथा सर्वहारा वर्ग में यह सचेतना होती है कि संतान ही उनकी पूँजी है। क्योंकि जितने अधिक हाथ होगे उतनी अधिक मजदूरी आयेगी। परन्तु इस सोच से श्रम का विशाल अधिशेष बनता है जिससे wage rate कम हो जाती है। एवं पुनः संतानोत्पत्ति एवं जनसंख्या वृद्धि का चक्र उत्पन्न होता है। एवं wage Rate पुनः गिरती है। इस प्रकार जनसंख्या विस्फोट निरंतर जारी रहता है तथा वर्ग विभेद बढ़ते है। मार्क्स ने जनसंख्या नियंत्रण का उपाय पूँजीवाद का अंत बतलाया है।

मार्क्स ने संसाधनों के दोहन के लिए पूँजीवादी व्यवस्था को ही दोषी माना है क्योंकि धन लालच में ये संसाधनों का अधिक दोहन करते है।

Malthus	Marx
① पूँजीवाद के समर्थक	① विरोधी
② जनसंख्या वृद्धि का कारण श्रमिक वर्ग है।	② कारण पूँजीवादी अर्थव्यवस्था है जो सर्वहारा वर्ग का दोहन करता है तथा आर्थिक संकट के कारण यह वर्ग संतानोत्पत्ति करता है।
③ समाधान - Preventive check, Positive check	③ समाधान - पूँजीवाद का अंत।
④ जनसंख्या वृद्धि को High wage rate से नियंत्रित किया जा सकता है। —	④ पूँजीवाद के अंत से —
⑤ Malthus ने जनसंख्या से उत्पन्न crisis की उद्घोषणा की है।	⑤ आर्थिक संकट, गृहयुद्ध, क्रांतिकारी परिवर्तन, पूँजीवाद के कारण होगा जनसंख्या वृद्धि के कारण नहीं।
⑥ Malthus ने Airthmetic एवं Geometric rate पर आधारित model दिया है।	⑥ ये जनसंख्या एवं खाद्यान्न में अंतर्संबंध स्थापित नहीं करते है। खाद्यान्न संकट का कारण धन संचय मानते है।

20/09/2012
Noon

Demographic Transition Model :-
जनांककीय संक्रमण सिद्धान्त

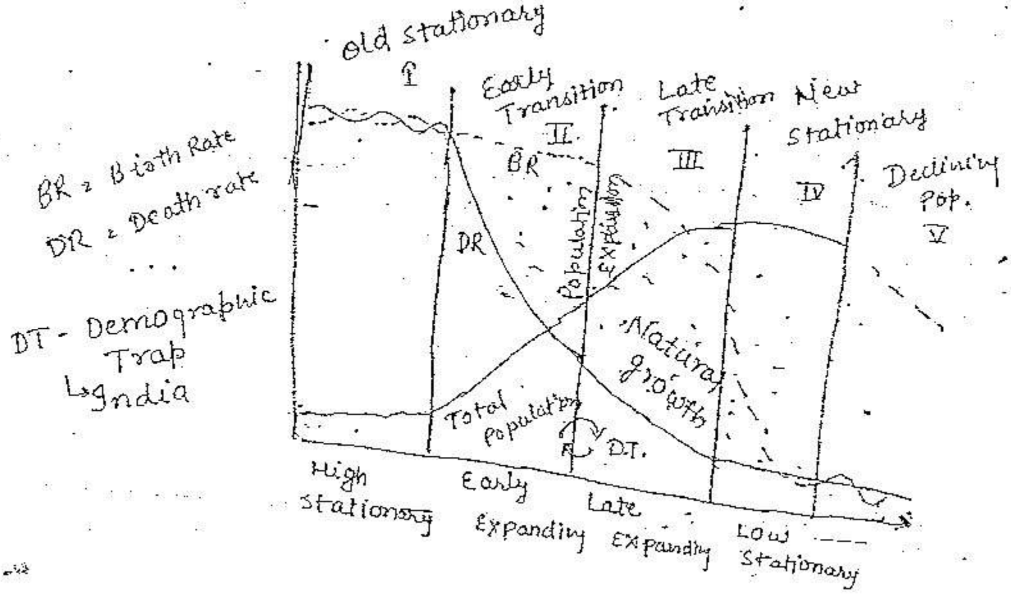

Age Structure

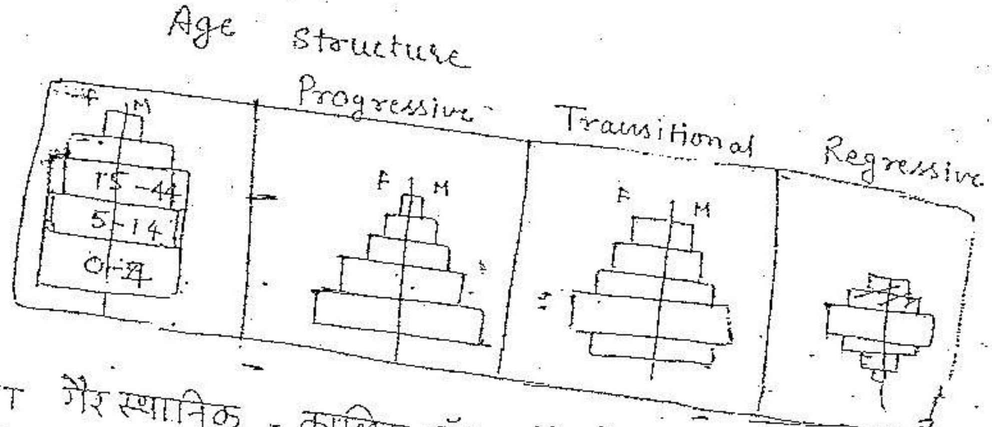

DTT गैर स्थानिक - कालिक मॉडल है जो जनसंख्या परिवर्तन अथवा प्राकृतिक वृद्धि को देश के बदलते आर्थिक, सांस्कृतिक सामाजिक प्रक्रियाओं से संबद्ध करता है। देश में demographic change को क्रमबद्ध एवं काल आधारित मॉडल के रूप में प्रस्तुत किया। इसके प्रणेता Nolestein एवं Thompson है जो यूरोप के जनांककीय इतिहास, औद्योगिक क्रांति एवं वैज्ञानिक अन्वेषण के साथ जन्मदर एवं मृत्यु दर को परिवर्तनशील मानते है।

मूलभूत अवधारणायें:- ① पारंपरिक कृषि समाज में BR व DR दोनो उच्च होते हैं।

② आर्थिक वृद्धि एवं औद्योगिक क्रांति के साथ जन्म दर एवं मृत्यु दर में परिवर्तनशीलता देखी जाती है। प्रथमतः मृत्यु दर घटता है पुनः जन्म दर।

③ आर्थिक वृद्धि के साथ समाज व्यक्तिपरक, उपभोक्तावादी होता है तथा शिशु की कामना घटती है।

④ जनसंख्या में विस्फोट के उपरांत क्रमशः पतन होता है. जबकि विस्फोट तीव्र होता है। -- (बीरे-2)

Phase I :- High stationary Phase :-

परम्परागत कृषि आधारित समाज, दुर्भिक्ष अकाल, महामारी, कुपोषण, प्राकृतिक आपदा से ग्रस्त, धार्मिक अन्धविश्वास से ग्रस्त, Pre newtonian science, BR, DR दोनो ही 35 व्यक्ति /1000 से उच्च, जनसंख्या वृद्धि दर न्यून। कुल जनसंख्या स्थैतिक
Ex- पश्चिमी एवं पूर्वी अफ्रीकी देश

Phase II : Early Expanding Phase :-

BR - 35 से उच्च परन्तु DR - 20 व्यक्ति /1000 क्योंकि कृषि क्रांति के कारण उत्पादकता में वृद्धि खाद्यान्न कृषि संकट एवं भुखमरी में नियंत्रण, आर्थिक अधिशेष की उत्पत्ति, औद्योगिक क्रांति जिससे R & D एवं medicine की खोज, चिकित्सा सुविधा etc.

Ex - Bangladesh, Pakistan, W. Asia जहाँ आयातित medicine है।

Phase III :- Late Expanding Phase :-

DR घटकर 10-15 व्यक्ति /1000 ., BR -20
जन्म दर में पतन होता है क्योंकि समाज में उपभोक्ता वाद, व्यक्तित्व वाद, वैज्ञानिकता, Nuclear family का प्रचलन एवं भुखमरी, महामारी, कुपोषण पर नियंत्रण।

Ex- China, South Africa

~~Stag~~ Phase IV :- Low stationary Phase

जनसंख्या पुन: स्थैतिक हो जाती है जिसमें BR एवं DR दोनों ही नियंत्रित हो जाता है एवं 10-15/1000
इस चरण में आर्थिक पूँजीवाद धर्मान्धता के स्थान पर विज्ञान, One child policy एवं उच्च female education, woman empowerment high.

Ex- USA, Canada, UK

Phase V :

वर्तमान Europe में एवं विकसित देशों में नई जनसंख्या प्रवृत्तियाँ दृष्टिगोचर है।

Ex- BR, DR से भी कम है तथा जनसंख्या में negative growth हो रहा है।

Ex- Japan, Russia, Germany, Austria

Application :- ① यह मॉडल Europe के परिपेक्ष्य में निर्मित है अतः अफ्रीका एवं एशिया के देशों में लागू नही होता।

② सभी अवस्था अनुक्रमित प्राप्त नही होती।

③ आर्थिक वृद्धि के साथ जनसंख्या वृद्धि के संबंध उचित नही है। पश्चिम एशिया के देश आर्थिक वृद्धि में stage IV जबकि जनसंख्या वृद्धि में stage II

④ Australia एवं NZ जैसे देश जो श्वेत लोगों के प्रवसन से बने है वहाँ कोई भी stage लागू नही होता अथवा stage I से stage IV की प्राप्ति हुई है।

⑤ भारत जैसे देश Demographic trap में तथा Phase II व III के मध्य में प्राप्त होते है।

⑥ इस मॉडल में जनसंख्या परिवर्तन के अन्य कारक प्रवसन को स्थान नही दिया गया है।

⑦ यह मॉडल अत्यंत नियतिवादी एवं पूर्वघोषणाकारी है।

<u>जनसंख्या संबंधी अन्य सिद्धान्त</u> :- इन सिद्धांतो को 2 वर्गों में रखा जाता है :

<u>प्रकृतिवादी सिद्धान्त</u> :- Malthus, Seddler

<u>आर्थिक सामाजिक सिद्धांत</u> :- Marx, duomont, Recardo.

<u>Seddler</u> :- ये Malthus के विरोधी थे एवं Malthus के praventive एवं positive check का विरोध करते है विशेषकर positive check पर आपत्ति है।

इनके अनुसार जनसंख्या जब क्रांतिक बिन्दु अथवा Thresold पर पहुँचती है तब जनसंख्या पर स्वयं ही नियंत्रण कायम हो जाता है क्योंकि मानव की संतानोत्पत्ति की कामना घटती है। संसाधनों पर दबाव, खाद्यान्न संकट जैसी दशाओं में मानव की मूल प्रवृत्ति में ही परिवर्तन होगा तथा वह स्वयं ही जनसंख्या उत्पादित नही करता।

<u>Duomont</u> :- इनके अनुसार जैसे भौतिक कोशिका क्रिया कार्य करती हैं उसी प्रकार सामाजिक केशिका क्रिया भी आर्थिक क्रिया से उत्पन्न होती है इसका अर्थ है व्यक्ति की आर्थिक सामाजिक प्रगति की कामना। आर्थिक प्रगति के साथ-2 मानव के सोच में भी परिवर्तन होते है तथा उसकी मुख्य कामना संतानोत्पत्ति न होकर आर्थिक वृद्धि एवं उपभोगवाद होता है। व्यक्तिपरकता, मनोरंजन विलासी जीवन की प्रधानता बढ़ती है तथा अधिक संतान इस मार्ग में बाधक होते है अतः मानव

social capillarity के साथ अपने नृजातीयता, प्रजातीयता एवं भाषायी सचेतना को छोड़ता है तथा आर्थिक संपन्नता की ओर प्रेरित रहता है। इसका असर महिलाओं पर विशेष रूप से दिखता है। जिससे उनके fecundity में अंतर उत्पन्न होता है

- Population Growth & Distribution - I & II
- causes & consequences of Migration
- Types of Migration - International
  - National
    - Intra Regional
    - Interstate
    - Inter Regional

Classification - Rural - Rural
- Rural - Urban
- Urban - Rural
- Urban - Urban

Population Growth & Distribution :- वृद्धि विश्लेषण का कालिक वितरण है जबकि जनसंख्या ~~विश्लेषण~~ स्थानिक विश्लेषण वृद्धि को BR, DR एवं प्रवसन के आधार पर विश्लेषित करते हैं तथा यह मूल रूप से दशकीय वृद्धि दर एवं, वार्षिक वृद्धि दर के आधार पर आंकलित किया जाता है जबकि जनसंख्या वितरण भूदृश्य पर जनसंख्या के संकेन्द्रण अथवा घनत्व का विश्लेषण है।

विश्व मे जनसंख्या वृद्धि पर ~~Durand~~ Durand ने एक मॉडल प्रस्तुत किया है जो अनुमानित जनसंख्या एवं आर्थिक क्रियाओ में परिवर्तन तथा विज्ञान - प्रौद्योगिकी के संबंधो पर आधारित है

Phase I कृषि क्रांतिकाल 8000 BC से 1779, BR एवं DR दोनो ही 35 से उच्च
विश्व की कुल जनसंख्या 1650 में 500 million अनुमानित की गई जो 1850 में 1 Billion हुई।

Europe में औद्योगिक क्रांति के आने से जनसंख्या विस्फोट हुए जबकि गैर विकसित देशों में जनसंख्या स्थैतिक रही।

Phase II - औद्योगिक क्रांति काल (1779 - 1925)

75 वर्ष में जनसंख्या 2 गुनी हो गई अर्थात 1850 में 1 B. से बढ़कर 2 Billion हो गई। इसका मुख्य कारण दुर्भिक्ष महामारी अकाल एवं कुपोषण पर नियंत्रण तथा Medicine एवं स्वास्थ्य सुविधाओं की उपलब्धता बढ़ी।

Phase III - 1925 - 75 :- विकसित देशों की जनसंख्या नियंत्रित हुई किन्तु विकासशील देशों में जनसंख्या विस्फोट देखा गया जिसका मुख्य कारण आयातित Medicine एवं Food security महामारी में नियंत्रण ; 1975 में जनसंख्या 4 Billion प्राप्त हुई।

Phase IV - जनसंख्या पतन का New declining Phase :-

विकासशील देशों में जनसंख्या वृद्धि दर में कमी देखी जा रही Ex- भारत, चीन, South Asia परन्तु कुल जनसंख्या में विस्फोटक वृद्धि जारी है। 2001 में जनसंख्या 6 Billion तथा 2025 तक 8 Billion अनुमानित थी परन्तु 2015 में ही यह जनसंख्या 8 Billion हो जायेगी।